ॐ श्री सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की एकमात्र अधिकृत मासिक पत्रिका

15 मई 2005 | वर्ष 25 अंक 7

संस्थापक : सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश सन्देश



सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

'सच बोलिये' सच से प्रेम रखना चाहिए और सच की सेवा करनी चाहिए. वह सच ही परमात्मा है, वह सच आपके अन्दर ही है. वह कभी भी नष्ट होने वाला नहीं है :- सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज

मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के श्रीमुख से पंजासाहब गुरुद्वारे में प्रवाहित अमृतवाणी

पवित्र तीर्थ

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था, वसुन्धरा पुण्यती चतेन.
अपार संवित् सुख सागरेऽस्मिन्, लीनं परिब्रह्मणि यस्य चेतः ..

जिसका मन उस परिपूर्ण परमात्मा में स्थित है, उसने अपने पूरे कुल का उद्धार कर दिया है. वे तत्ववेत्ता महात्माजन जहां-जहां भी बैठते हैं, वह स्थान पवित्र तीर्थ बन जाता है और पूजने योग्य हो जाता है. उनकी माता भी धन्य है. गुरू नानक साहब इस स्थान पर आकर बैठे थे, इसलिए यह स्थान भी परम पवित्र तीर्थ बन गया है. अनन्त जीव यहां आकर श्रद्धा से सेवा कर अपना मनोवांछित फल पाते हैं. जहां पर भी कोई तीर्थ स्थान है वहां पर सन्त महात्माओं ने बैठकर भजन किया है. **जहां सन्त बहन्दे, सेई थान सुहन्दे**

सन्त महात्माओं के संग में कितने ही पानी भी तर जाते हैं. सन्तों की महिमा अपरम्पार है. सन्त स्वयं अविद्या नींद से जागकर दूसरे जीवों को भी अविद्या नींद से जगाते हैं. कितने ही कष्ट सहनकर, भ्रमण कर जगत के जीवों का उद्धार करते हैं. जैसे श्री गुरू नानकदेवजी ने आजीवन भ्रमण कर धर्म का प्रचार किया और सभी जीवों को सही मार्ग बतलाया. सन्तों का यह कहना है :

साधू होके सैर न कीता, क्यों फकीरी पाई है. मानुष होके राम न जपिया, मानुष देह लजाई है

इसलिए सन्त महात्मा सदा सैलानी होते हैं और संसार से अलग रहकर सभी को प्रभु का नाम जपाते हैं.

वार्षिक शुल्क :- रू. 50 (भारतवर्ष में), रू 500 (विदेश में)

श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा अयोजित सभी शहरों के भक्तजनों के लिए

साईं टेऊँराम जीवनलीला स्मरण प्रतियोगिता

आध्यात्मिक प्रतियोगिता

सुनाने की अंतिम तिथि	परिणाम	पुरस्कार वितरण
रविवार 3 जुलाई 2005	रविवार 10 जुलाई 2005	सोमवार 11 जुलाई 2005

सुनाने के स्थान

श्री अमरापुर स्थान जयपुर के अतिरिक्त विभिन्न शहरों के प्रेम प्रकाश आश्रमों में भी सुना सकते है ।

१. संत मुरलीधर, खैरथल
२. संत नन्दलाल, हरिद्वार
३. संत लालूराम, दिल्ली
४. संत शम्भूलाल, इन्दौर
५. संत श्यामलाल, कोटा
६. संत संजय, मीरा मन्दिर, बड़ौदा
७. मोहन शिवनानी, अजमेर
८. कैलाश बदलानी, टोंक
९. सांवल प्रेमप्रकाशी, मुरैना
१०. मीनू प्रेमप्रकाशी, हथीन
११. संत भोलाराम, ब्यावर
१२. श्रीचंद पंजवानी, ग्वालियर
१३. संत परसराम, डबरा
१४. संत राजूराम, चित्तौड़गढ़
१५. संत हरीशलाल, गोंदिया
१६. संत नरेशलाल, द्वारिकापुरी, इन्दौर
१७. महेन्द्र प्रेमप्रकाशी, सीकर
१८. भगवन्ती दीदी, आगरा
१९. संत महादेव, वाराणसी
२०. ताराचंद श्यामवानी, जोधपुर
२१. रामचंद करनानी, निवाई (टोंक)
२२. लक्ष्मी मगतानी, शास्त्रीनगर भीलवाड़ा
२३. कोमल जीवनराम, अहमदनगर
२४. शंकरलाल, गांधीधाम
२५. मोहन (टेकू), धमतरी
२६. राखी, शारदा, रायपुर
२७. रूपा नोतानी, खैरथल
२८. रमेश राजपाल, सूरत
२९. जय अलवानी, अहमदाबाद
३०. वन्दना किशनचंद, राजनांदगांव
३१. संत हेमन्त प्रेमप्रकाशी, खार (मुम्बई)

नियम

- इस प्रतियोगिता में किसी भी शहर, जातिवर्ग एवं आयुवर्ग के भक्तजन भाग ले सकते हैं.
- प्रतियोगिता में सांई टेऊँराम लीला के पद ३ जुलाई २००५ से पूर्व याद करके श्री अमरापुर स्थान, जयपुर के अतिरिक्त लिखे हुये अन्य प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी सुना सकते हैं.
- दोहे याद करने के लिए टी.सीरीज द्वारा प्रस्तुत सांईं टेऊँराम लीला कैसेट, फोल्डर अथवा प्रेम प्रकाश संदेश के अप्रैल अंक में प्रकाशित के माध्यम से याद करें.
- दोहे सुनाने वाले प्रतियोगी अपना पूरा नाम, पता, आयु व फोन नम्बर अवश्य लिखायें.
- प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में स्वरबद्ध सुनाने पर चयन करके दिया जायेगा.
- सभी प्रतियोगियों को सांत्वना पुरस्कार व प्रमाण-पत्र ११ जुलाई २००५ को आचार्यश्री के प्रकटोत्सव पर दिये जायेगें.

साईं टेऊँराम बाबा का प्रकटोत्सव

7 से 11 जुलाई 2005

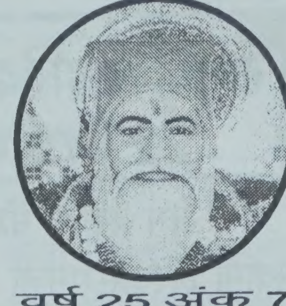
11 जुलाई श्री महाराजश्री के अवतरण दिवस पर घर-घर दीप जलायें.



सांई टेऊँराम जीवनलीला के पद स्वरबद्ध याद करने के लिए टी.सीरीज कैसेट सांई टेऊँराम लीला तेरी तू ही जाने मात्र 25 रु. में श्री अमरापुर स्थान सहित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों से प्राप्त क

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत मासिक पत्रिका



प्रेम प्रकाश संदेश

15 मई 2005

वर्ष 25 अंक 7

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिए –	50 रू.	500 रू.
तीन वर्ष के लिए –	140 रू.	1400 रू.

मूल्य एक प्रति 5 रूपए

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए.

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र–व्यवहार के लिए पता :– व्यवस्थापकः– कार्यालय– प्रेम प्रकाश संदेश,
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर ग्वालियर–474001,
फोनः0751–5045144 सांय 4 से 8 बजे तक,
शेष समय 2454183फैक्सः0751–5045144
e-mail-editorpremprakashsandeshgwl@yahoo.com
our website-www.premprakashpanth.com

अनुक्रम

विषय	पृष्ठ
1. मर्यादामूर्ति सदगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज (सदगुरू हरिदासराम जयंती विशेष)	2
2. मेरे प्यारे गुरुदेव स्वामी हरिदासरामजी महाराज (सदगुरू हरिदासराम जयंती विशेष)	3
3. भजन (सद्गुरू हरिदासराम जयंती विशेष)	4
4. रे मन अब तो जाग जा (चेतना)	5
5. ईश्वर की भक्ति ही दुस्तर माया से छुड़ा सकती है	7
6. पावन प्रसंग	7
7. तदुरूस्त रहे (खरी–खरी बातें)	8
8. पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संतमण्डली का देशाटन (यात्रा–दर्शन)	9
9 गर्व हुआ काफूर (प्रसंग)	10
10.लालच बुरी भला (प्रसंग)	10
11.84 लाख योनि के चक्कर को मिटाने वाला चैत्रमेला	11
12.प्रेम प्रकाशी मेल–मिलाप का संक्षिप्त आयोजन (सद्गुरू टेऊँराम गौशाला)	18
13.आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली–15	19
14.सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज व स्वामी माधवदासजी का वर्सी उत्सव (सूचना)	20
15.नवनिर्मित सूरत आश्रम उद्घाटन (सूचना)	20
16.सांई टेऊँराम बाबा की लीलाएँ (चित्रकथा–15)	21
17.आध्यात्मिक वर्गपहेली–18 (दिमागी कसरत)	22
18.तीज–त्यौहार	23
19.पुरी मेला समाचार	23
20.शांत ही सच्चा वीर है (प्रसंग)	23
21.निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षा जयपुर में	23
22.गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का यात्रा कार्यक्रम	24

आवरण पृष्ठ :–
पवित्र तीर्थ, अमरापुर स्थान द्वारा आयोजित पद स्मरण प्रतियोगिता, नयी पुस्तकों व कैसेट्स समीक्षा, आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति गुरूवार, रविवार प्रातः 8 से 12 बजे तक व प्रति शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए प्रेम प्रकाश संदेश काउंटर पर श्री कुमार चंदनानी व श्री नारायणदास रामचंदानी जी के पास शुल्क जमा किया जा सकता है.

सद्गुरू हरिदासराम जयन्ती 22 मई पर विशेष

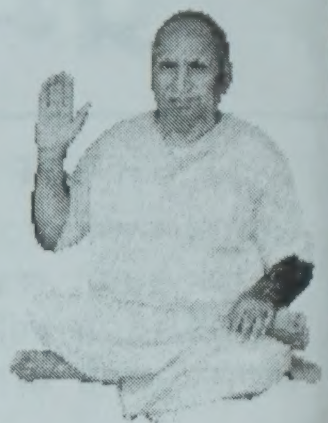
मर्यादामूर्ति सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज

प्रेम प्रकाश मंडल के चतुर्थ उत्तराधिकारी सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज का जन्म १३ बैसाख, सन् १९३० ई. सिन्ध के सांघड़ जिला के गुंडन गाँव में श्री हीरानन्द के घर में हुआ उनके माता का नाम मोतिलबाई था. उनके जन्म का नाम श्री लालचन्द था. सत्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज उनके मामाजी थे. स्कूल की पढ़ाई के साथ उन्होंने धार्मिक विद्या भी प्राप्त की. सन् १९४२ ई. में उन्होंने अमरापुर स्थान जयपुर में सत्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से गुरू मंत्र लिया. वे सदैव उनके श्रीचरणोंमें रहकर संतोकी सेवा भी करते रहे और धार्मिक शास्त्रोंका अध्ययन भी करते रहे. सत्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराजने उनका नाम संत हरिदासराम रखा.

सत्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज संत हरिदासराम को देश-विदेश के विभिन्न नगरों में नाम-प्रचार के लिये ले जाते थे. पहले स्वामी हरिदासराम भजन गाते थे. तत्पश्चात् सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज सत्संग करते थे. स्वामी हरिदासराम सत्गुरू महाराज के साथ हारमोनियम भी बजाते थे.

अगस्त सन् १९६२ ई. में प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय अध्यक्ष सत्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ब्रह्मलीन हुए, तब मंडल के संतों ने स्वामी हरिदासरामजी महाराज को धर्मपीठ का उत्तराधिकारी बनाया. उन्होंने देश-विदेश के विभिन्न नगरों में भ्रमण कर नाम का प्रचार करते प्रेमियों की प्यास पूरी की. २६ अगस्त सन् २००० एकादशी के पावन दिन प्रभात को वे स्पेन में ब्रह्मलीन हुए. उनका पार्थिव शरीर अमरापुर स्थान जयपुर में लाया गया. कई संतो व प्रेमियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की. मंडल के संतों ने स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज को सत्गुरू महाराज की गादी पर विराजमान किया.

परम्परा से प्रभावित सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज ने भी सिन्धी एवं हिन्दी में काव्य रचना की.



गुरू महिमा : स्वामी हरिदासरामजी महाराज के मन में सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं गुरूदेव स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी. वे एक पद में सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन चरित्रका चित्र प्रस्तुत करते हुए उनकी महिमा गाते हुए कहते हैं-

जय जय जय टेऊँराम स्वामी, कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी.

स्वामी हरिदासराम सत्गुरू स्वामी, सर्वानन्द महाराज से विनय करते अपनी मनोदशा का उल्लेख करते हैं और पाँच विकारों को दूर करने के लिए प्रार्थना करते हैं

दुख दर्द करो सब दूर, शरणागत मैं तेरी.
स्वामी सर्वानन्द महाराज, सब विपत्ति हरो मेरी.
१.अनगिनत कामनाएँ, मन में मेरे बसतीं.
काली नागिन बनकर, दिन रात मुझे डसतीं.
अब भस्म उन्हें कर दो, मत नाथ करो देरी.
२.यह विकट क्रोध ज्वाला, जिस क्षण प्रज्वलित होती.
ना गरम ना शरम रहे, सब शान्ति सुमति खोती.
अब शान्त इसे कर दो, जिसने मम मति घेरी.
३.यह लोभ सदा मन को, इत उत भटकाता है.
तम मोह का ऐसा है, कुछ नजर न आता है.
अब नाश इन्हें कर दो, ये हैं जन्मों से वैरी.
४.अहंकार बली सबसे, दुष्कर है दुःख दाता.
मैं मेरा का बंधन, ना तोड़ कोई पाता.
मुझे बन्धन मुक्त करो, बन जाऊँ तव चेरी.
५.दुस्तर भव सागर में, गोते खाते खाते.
युग बीत गए मुझको, जग में आते जाते.
अब पार मुझे कर दो, मिटे चौरासी फेरी.

डॉ. दयाल 'आशा', उल्हासनगर-5

मेरे प्यारे गुरूदेव स्वामी हरिदासराम जी महाराज

सद्‌गुरू हरिदासराम जयन्ती 22 मई पर विशेष

क्या कहें तिनके बारे में,
उनको कौन नहीं है जानता.
निर्मान थे निर्मोही थे,
जो नित सादगी में वासता..
माया छू नहीं सकती थी,
नित उनसे ही डरती थी.
सद्‌गुरू हरिदासराम को,
तीन लोक नमती थी..

सत्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चतुर्थ स्वरूप सत्‌गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज जिनका पावन जन्म उत्सव १८ से २२ मई तक भगवान के पावन धाम श्री जगन्नाथ पुरी में मनाया जा रहा है. सतगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज का तीर्थों से विशेष लगाव था. सतगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज सत्य के पुजारी थे एवं सत्य के मार्ग दर्शक थे. यूं कहना भी अनुचित नहीं होगा कि वो साक्षात्‌ सत्य धर्म के मूर्तिमान स्वरूप थे. इस दास को उनकी निकटता का अवसर मिला और सानिध्यता में बहुत कुछ सीखने को मिला कुछ प्रसंग यहां उल्लेख किय जाते हैं. एक बार सत्‌गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज यहाँ मुरैना पधारे. हमारे परिवार के लोगों ने कहा कि गुरू महाराज जी हमें अपने बच्चों का यज्ञोपवीत संस्कार जयपुर में आपकी हाजरी में ही करवाना है. महाराजश्री का उत्तर था कि हम शरीर से वहां हों न हों हमारा होना अति आवश्यक नहीं. गुरू महाराजजी का वहां होना आवश्यक है और सत्‌गुरू टेऊँरामजी महाराज वहां सदैव विराजमान हैं, आप निशंक होकर के (हमारे होने न होने की चिंता न करें) वहां जाकर जयपुर में बच्चों को जनेऊ पहनावें. इस प्रसंग का सारांश यही है अपने को मुख्यता न दिलाकर के प्रेमियों को ये महसूस कराना कि सतगुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज ही सब कुछ हैं.

मुमुक्षुओं को पहचानना

एक बार एक शहर में किसी माता ने महाराजश्री को अपने घर में पधारने के लिये प्रार्थना करी. सतगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज ने बोला कि हम आयेंगे चंद मिनटों से ज्यादा नहीं बैठेंगे. जब महाराजश्री वहां पधारे उस माता ने जिज्ञासापूर्वक मुमुक्षुता से भरे ऐसे प्रश्न किये जो महाराज श्री का हृदय गदगद हो गया. उस घर में करीबन डेढ़ घन्टा बैठे रहे और उनकी शंकाओं का समाधान करते रहे. इस प्रसंग का सारांश यही है कि जिज्ञासा वालों का महापुरूष बहुत आदर करते हैं. सतगुरू टेऊँरामजी महाराज ने भी कहा है कि

दोहा : संत वहां सुख मानते जहाँ झझे हो चार
झंगल झुगिया जिज्ञासा चौथी जल की धार

सदैव निस्पृही (कामना रहित)

सतगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज सतत्‌ ही जगत से उपराम रहते थे एक बार उनके साथ बनारस में बैठे थे. आपने ही श्रीमुख से फरमाया कि.

दोहा : सुंञ हल्या सुंञ दे, सुंञनि सुंञ सुहाय
सुंञनि सुंञ मंजाइ, सोधे लधो सुपरीं

अर्थात्‌ जो अन्दर से खाली होते हैं उनको निर्जन स्थान अच्छे लगते हैं क्योंकि वो एकांत में ही अपनी समस्त वृत्तियों का एक में अन्त कर देते हैं (एक + अन्त बराबर एकांत) खाली उनका कहना ही नहीं देखने को भी मिलता था. ग्वालियर में एक बहन ने आकर के कहा - महाराजश्री आपका आधा बिस्तर सामान से घिरा हुआ है और आधे में विश्राम कर रहे हो तो महाराजश्री ने कहा कि जीवन एक ट्रेन है जरासी जगह में गुजारा करना मानो कि एक बर्थ (ट्रेन में) में सफर कर रहे हैं.

प्रसंग तो बहुत हैं एक बार श्री गुरूमहाराज के साथ कलकत्ता होते हुए जगन्नाथपुरी, भुवनेश्वर, साक्षीगोपाल, दौलगिरी कोणार्क, सूर्य मन्दिर और गंगासागर आदि तीर्थों में जाना हुआ और सुन्दर दर्शन किये वहां दास ने ये भजन भी महाराज श्री के सम्मुख गाया.

तर्ज : घर आया मेरा परदेसी

थल : धन धन सतगुरू हरिदासराम जिन कराया तीरथ धाम

जगन्नाथपुरी आया सूं, सुहिणां ठाकुर जा दर्शन पाया सूं
अखडिनि खे मिलियो आराम
भुवनेश्वर जो दर्शन थियो, दर्शन करे मन परसन कयो
आनंद पातो संगत जाम
गंगा सागर में गंगा बहे, पापिनि खे जेका छदे दहे
गुरूदेव हिते करायो स्नान
जुग जुग सतगुरू शाल जियनि किरपा पहिंजी पया करिनि
चरणनि में कया परणाम
दास प्रताप अरदास करे चरणनि में थो शीश धरे
निशदिन जपियां तुहिंजो नाम

यहां एक अदभुत घटना का उल्लेख करना परम आवश्यक है. वहां गुरू महाराज और संत मंण्डल जिनमें सतगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, संत जयदेवजी महाराज, एवं संत श्रीमुक्त और सारे प्रेमी जिनमें बहन कमल चेनानी, श्री ठाकुरदास मद्रास, रायपुर के प्रेमी, रायगढ़ के प्रेमी, भाटापारा के प्रेमी और भी बहुत सारे शहरों के संत और सत्संगी जन साथ में थे. अचानक दास को एवं सतं श्रीमुक्त को आज्ञा करी कि चलो स्नान करके आवें. महाराज श्री गंगासागर में स्नान करके आये फिर हमें आज्ञा करी की आप लोग भी स्नान करके आओ मैं आपके कपड़ों की रखवाली करता हूँ समुद्र की शोलियों का पता नहीं चलता. समुद्र की शोलियां वहां तक पहुंची जहां पर हमारे जूते और कपड़े रखे थे महाराजश्री ने सब उठाकर सूखी जगह पर रख दिये जब हमने क्षमा याचना करी तो महाराजश्री कहने लगे "घर में गुरू सफर में साथी" तो ऐसे मेरे प्यारे गुरूदेव को मेरा शत-शत बार-बार नमन. गुरूनानक देवजी ने भी कहा है मन अपने में जो है निचा सोऊ गने सबते ऊँचा.

सन्त प्रतापराय, प्रेमप्रकाश आश्रम, मुरैना

भजन

थल : पंख होते तो उड़ आती रे, रसिया ओ जालिमा
मेरे सांई का जन्मदिन आया है, सुनो रे भक्तों सुनो,
सब मिलजुलकर खुशियां मनाते हैं।

१. उनकी महिमा के गीत गाएं,
उनकी करूणा की बातें सुनाएं.
जैसी कथनी वैसी थी करनी,
सादगी से भरी थी रहनी. सुनो रे भक्तों सुनो.

२. जैसी है सूरत वैसी है सीरत,
प्रेम दया की है साक्षात मूरत
भक्तों की बातें बिन बोले जाने,
सब दिलों का हाल वो जानें. सुनो रे प्रेमियों सुनो.

३. चरनों में विनती है ये हमारी
हर घड़ी लाज रखना हमारी.
जैसे भी हैं हम हैं तो तुम्हारे
जीते हैं तेरे ही तो सहारे, सुनो रे प्रेमियों सुनो.

कुमारी, सुरेश गिदवानी, अजमेर

तर्जः तूने मुझे बुलाया शेरा वालिये.

थलुः स्वामी हरिदासराम हैं आया प्रेम प्रकाशियों-२
है आनन्द बहुत ही छाया प्रेम प्रकाशियों-२
ओ घुंडन वालेजी,हरसोली वालेजी,ओ जयपुर वालेजी

१. सतुगुरू टेऊँराम का प्यारा, सतुगुरू सर्वानन्द का दुलारा.
ज्ञान भक्ति जो है भंडारा-२,जस सतुगुरू का है बढ़ाया.
प्रेम प्रकाशियों........

२. माता जिनकी मोतिल बाई, पिता हीरानन्द है प्यारा.
दोनों थे हरी भक्त प्यारे-२,जस दोनों का जग में बढ़ाया.
प्रेम प्रकाशियों........

३. सतूनाम साक्षी मंत्र गुरू का, नाम अनादि आदि धुरका.
सबको उसका ध्यान दिलाया-२,सतूनाम साक्षी जपाया.
प्रेम प्रकाशियों........

४. आज जनम दिन उनका हैं,प्यारा जगन्नाथपुरी धाम है प्यारा.
स्वामी भगतप्रकाश हमारे-२ है,मेला यहां लगाया जयपुर वालेजी
प्रेम प्रकाशियों........

५. धन धन उनके भाग हैं भारे, जो इस मेले में हैं पधारे.
सबको मिलेगी आसीस गुरू की-२,जो इस मेले में आया
भक्त प्यारा जी.

है आनन्द बहुत..............................

प्रेमप्रकाशी महादेव, वाराणसी

चेतना रे मन अब तो जाग जा..

कबीरा ते नर अंध है, जो गुरू को समझे और
हरि रूठया तो गुरू ठौर है, गुरू रूठया नहीं ठौर

केवल जीव ही नहीं अपितु इस सारे चराचर जगत (जड़ व चेतन) का कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं है जहाँ सर्वव्यापी, परिपूर्ण, पारब्रह्म परमेश्वर सब देश व सब कालों में अंशी अर्थात् अंश के रूप में विद्यमान न हो. जड़ चेतन दोनों प्रकार की प्रकृति को वो ही अव्यक्त सच्चिदानन्द ही सत्ता व स्फूर्ति प्रदान करता है. तब ही तो भगवान कहते हैं-

पश्य में योग मेश्वरम्

अर्थात् मेरी इस अलौकिक ईश्वरीय रचना को देख. इस चौरासी लाख योनियों, स्वयं पर आये हुए दुःख-रोग एवं दूसरे पीड़ित व्यक्ति को देख, यही नहीं, नदी, नाले, वृक्ष पहाड़, पत्थर जिसमें भी उसका अंश है कि किस कर्म की परवश्वता अधीन ये सब इस स्वभाव व स्थिति को प्राप्त हुए हैं. क्या ये सब जानने का मन कभी जिज्ञासु को नहीं होता ? क्या कहीं हम तो आने वाले जन्म में इस स्थिति को प्राप्त तो न होंगे? और यदि कर्म की प्रमुखता वश ही ये परिणाम हैं तो कहीं हम अज्ञानवश कर्म की उस पुनरावृत्ति अर्थात् शास्त्र निषेध क्रिया तो नहीं कर रहे और यदि कर रहे हो तो किस साधन से मन को विषय से हटाया जा सकता है. यदि ऐसे आत्मा द्वारा आत्म कल्याण के प्रश्न स्वाभाविक जीव के मन में उठते हैं तो नकारात्मक दृष्टिकोण न अपनाते हुए गंभीरता से इसको जानने का जिज्ञासु बन जाना चाहिये. क्योंकि २४ घंटों में से कुछ पल ही ऐसे होते हैं. जब जीव की अन्तर आत्मा अपनी वास्तविक जिज्ञासा का स्वरूप जीव के समक्ष रखती है.

इस महाकलयुग में वैसे ही जीव का मन बहुत अभ्यास व पूर्व जन्म के सत्कर्मों से वह किसी सन्त के सानिध्य की प्रेरणा से हरिवचनों में लगता है -

बिन हरि कृपा मिलहिं नहीं संता

अतः जो फल तपस्या योग एवं समाधि से नहीं मिल सकता वो कलयुग में केवल हरिनाम के सुमिरन से मिल सकता है.

कलियुग केवल हरि गुन गावा, गावत नर पावहिं भव थाहा

भगवान परम सहृदयी हैं वे कहते हैं - वैसे तो मैं सब में अंश रूप से समान विद्यमान हूं पर जो भक्तिपूर्वक मेरा भजन करते हैं वे मेरे में है और मैं उनमें हूँ. अर्थात् जो मनुष्य योनि पाकर भी हरि भजन नहीं करते, उनकी बुद्धि विषयों में डूब जाती है. भोगों को मनुष्य नहीं भोगता, अपितु भोग मनुष्य को भोगकर क्षीण व जर्जर कर देते हैं. शरीर से ज्यादा मन से विषयों का भोग दुखकारी है अतः जिस प्रकार पीलिया के रोगी को मिश्री कड़वी लगती है पर उसके निरन्तर सेवन से पीलिया ठीक हो जाता है उसी प्रकार हरि नाम का चिन्तन करने से सारे भोग व विषय विलासों के प्रति उदासीनता व कड़ुवाहट आ जाती है जैसा कि प्रभु श्री राम जी ने रामचरित मानस में कहा है कि -

जानहिं तबहि जीव जब जागा,
जब सब विषय विलास विरागा.

अतः अब भी समय है रे जीव तू जाग जा क्योंकि **बड़े भाग मानुष तन पावा** कितना ही दुराचारी से दुराचारी व्यक्ति हो, यदि निश्चय कर ले कि मैं भगवान का भजन करूंगा तो उसका कल्याण निश्चित है. भगवान तो परम कृपालु है वो तो जैसे जीव के कल्याण के लिए आतुर बैठे हैं. देवताओं आदि की पूजा में तो फिर भी विधि विधान व मंत्रों की आवश्यता है परन्तु ईश्वर की प्राप्ति में किसी विधि विधान की आवश्यकता नहीं पड़ती. क्योंकि जीव के साथ परमात्मा का स्वाभाविक सम्बन्ध है. जैसे बालक को मॉ की गोद में जाने के लिऐ किसी विधि विधान की जरूरत नहीं पड़ती ऐसे ही ईश्वर की गोद, हर जीव के लिए हर पल सहज व स्वाभाविक तैयार है, कमी है तो केवल जीव के दृढ़ भक्ति भाव की. भगवान जीव के दृढ संकल्प की महिमा जिसके करते ही जीव जन्मों जन्मों के सफर को पलों में पूर्ण कर लेता है

उसकी तरफ संकेत करते हुए कहते हैं कि-

अपिचेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृतम्
सवज्ञानपल्नैव वृजिनं संतरिष्यसि

हे जीव यदि तू सम्पूर्ण पापियों में अत्यन्त पाप करने वाला है तो भी तत्वज्ञान से तू सम्पूर्ण पापों से तर सकता है.भगवान श्री कृष्ण का यह कथन सब जीवों को महान आश्वस्ता प्रदान करता है. जो जीव सब पापों को त्यागकर हरिनाम रूपी साधन में लग गया है उसका तो कहना ही क्या, परन्तु जिसने पूर्व में बहुत पाप किये हैं पर आज उसके मन में स्व के कल्याण की भावना जाग्रत हो गयी है तो वो भी अपना इसी जन्म में कल्याण कर सकता है. क्योंकि पूर्व में किये गए कर्म इतनी बाधा नहीं देते, जितने वर्तमान के करम विघ्न डालते हैं. यदि मनुष्य वर्तमान में पाप करना छोड़ दे और दृढ़ संकल्प कर ले कि मैं अब इसी पल से पाप कर्म नहीं करूंगा, केवल हरिनाम में ही मन लगाऊंगा तो उसके इस निश्चय से सारे पाप जड़ से नष्ट हो जाते हैं.आगे भगवान सुन्दर उदाहरण देकर अर्जुन को समझाते हैं कि जैसे एक कमरा सौ वर्षों से बन्द है और उसमें अंधकार है जब हम उसमे दीपक जलायेंगे तो क्या दीपक दो महीने या दो साल का अंधकार दूर करेगा नहीं, अपितु पूरा कमरा दीपक की लौ से प्रकाशित हो जाता है ऐसे ही पिछले पूर्व जन्मों में जीव ने जितने भी पाप किए हैं पर आज वह दृढ़ संकल्पी हो गया है कि मैं पाप नहीं करूंगा. तो कमरे की भांति उस दृढ़ संकल्प की लौ से हृदय परम ज्ञान से आलोकित हो जाता है.

जीव का चाहे किसी घटना, व्यक्ति व किसी संत से प्रेरित होकर यदि उसका भाव बदल जाता है तो उसको पूर्ण रूपेण आश्वस्त रहना चाहिए कि जैसी कृपा वाल्मीकि, अजामिल, व सदना कसाई पर हुई है, वैसी ही कृपा उस पर अवश्य होगी, क्योंकि देर है तो बस जीव के ईश्वर के सम्मुख होने की.

सनमुख होई जीव मोहि जबहिं, जन्म कोटि अघ नासहिं तबही
कोटि विप्र वद्य लागहिं जाहू, आए सरन, तजउ नहिं ताहू

इसलिए जीव को कभी भी किसी भी परिस्थिति में निराश नहीं होना चाहिए. क्योंकि गल्तियां इंसान से होती हैं. कोई भी पुरूष पूर्ण ज्ञानी नहीं होता. गुण व अवगुण दोनों ही जीव में विद्यमान रहते हैं पर जब ईश्वर की या किसी संत की प्रेरणा से जीव प्रेरित हो जाता है तब क्रमशः अवगुणों का ह्रास होने लगता है.

सुमति कुमति सबके उर माहि, नाथ पुरान निगम अस कहही

चाहे कैसे ही यदि मन में भाव आत्म कल्याण का अर्थात् स्व के कल्याण का आ गया है तो भगवान की दृष्टि केवल भाव पर रहती है आचरण पर नहीं -

रहति न प्रभु चित, चूक किए की,
करत सुरति सय बार हिए की.

क्योंकि भगवान भाव के ग्रहणकर्ता है -

भावग्राही जर्नादनः

यदि भीतर से आप भगवान के हो गए हो, भीतर से जीव ने अहंता त्याग दी है, तो वो हर दृष्टि में साधू ही है क्योंकि अब उसके आचरण बदलने में देर नहीं लगेगी, क्योंकि केवल बुद्धि का निश्चय स्थिर नहीं रहता, पर जब बुद्धि के साथ कर्ता का निश्चय जुड़ जाता है कि मुझे परमात्मा की तरफ चलना है, तो फिर ये निश्चय कभी मिटता नहीं क्योंकि ये निश्चय स्वयं का होता है क्योंकि जीव को सबसे अधिक समय स्वयं की स्वयं पर कृपा करने में लगता है. स्वयं की कृपा होते ही जीव जल्दी ही धर्मात्मा बन जाता है- **क्षिप्रं भवति धर्मात्मा.** सारे अवगुण - सारे दुराचार केवल भगवान से विमुख होने पर जीव में आते हैं, उसके सम्मुख हो जाने पर अवगुणों का नाश हो जाता है. अतः जिस प्रकार - दूसरों के कर्तव्यों पर दृष्टि रखने से जीव अपने कर्त्तव्यों से च्युत हो जाता है ठीक उसी प्रकार परमेश्वर से विमुख होते ही जीव सारी विपदाओं से ग्रसित हो जाता है. **अतः मा भजस्व** अर्थात् भगवान की यह वाणी कि **मुझे भजो** इसमें सर्वथा-सर्वथा जीव का ही कल्याण है. अतः हम सब मिलकर गुरू महाराज से प्रार्थना करेंगे कि हमारा मन भी पार्वती मैया के मन की तरह दृढ़ संकल्पी बना दें -

जन्म कोटि लगि रगर हमारी, वरऊ सँभु न त रहऊँ कुंआरी.

श्रीमती स्मिता गिरयानी, जयपुर

ईश्वर की भक्ति ही दुस्तर माया से छुड़ा सकती है

माया को नहीं, परमात्मा को जानो. माया का अन्त पाना बड़ा कठिन है. नारद जी ने भी भगवान की माया को जानना चाहा पर माया के फेर में पड़कर वे भी मोहित हो गये. दरअसल चिन्तन करने योग्य तो परमात्मा है, संसार नहीं.संसार के चिन्तन का फल तो मोह व शोक ही है. परन्तु यह बात मनुष्य के बहुत सी ठोंकरें खाने के बाद समझ में आती हैं. संसार नश्वर है, मायामय है यह बातें जानने के बाद भी बारंबार उसमें प्रवृत्ति हो ही जाती है. यह जानते हुये भी कि धन किसी का नहीं है आदमी उसके लोभ में पाप करता है.यह ज्ञान होते हुए भी कि स्त्री मल मूल का थैला है, पुरूष भोग के लिये लपकता है. बारंबार साधक पछताता है परंतु फिर इन्हीं चीजों के लिये व्याकुल होता है. वह कहता है बस अबकी बार भोग लूं फिर छोड़ दूंगा पर वह कभी छोड़ नहीं पाता बल्कि वह जितना छोड़ने की कोशिश करता है उतना ही ये उस पर हावी होते हैं. यह माया अतिशय दुस्तर है, तभी भगवान को कहना पड़ा.

दैवी ह्येषा गुणमयी,मम माया दुरत्यया.
मामेव ये प्रपन्द्यते मायामेतां तरन्ति ते..

भगवान की शरण में जाने वाले ही इससे बच पाते हैं. निरन्तर भगवान का चिन्तन ही इससे बचा सकता है. जब हम कोई बड़ी चीज पकड़ेंगे तो छोटी चीज अपने आप छूट जायेगी. जब हमें भक्ति का रस मिलेगा तो संसार का रस फीका लगने लगेगा. दरअसल हमारे जीवन में कोई महान निष्ठा होनी चाहिये चाहे वह ज्ञान की हो, भक्ति की हो अथवा सेवा की हो. जिसके जीवन में निष्ठा नहीं वह कभी भी माया पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता. शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि विषय मनुष्य को साधन से नीचे गिरा देते हैं. इनमें जकड़ा हुआ कोई भी साधक परम पद को उपलब्ध नहीं हो सकता. अनन्य भाव से जो ईश्वर का भजन करता है वही इससे बच पाता है. इसलिये जो साधक आत्मसाक्षात्कार के इच्छुक हैं वे माया से डरकर निरन्तर भगवतभजन में लगे रहते हैं. परन्तु जिसके मन में थोड़ा भी अभिमान आ गया, उसे यह ठग लेती है माया महाठगिनी हम जानी. कबीर दास जी को भी कहना पड़ा.

चलन चलन सब कोई कहे, बिरला पहुँचे कोय
एक कनक अरू कामिनी,. घाटी दुर्लभ दोय

ऐसी दुस्तर माया को जीतने का उपाय एकमात्र हरि शरणागति है. जहां राम होंगे वहां काम रह नहीं सकता. निरन्तर नाम सुमिरण, सत्संग व भजन में लगे रहना चाहिये. और मृत्युपर्यन्त माया पर भरोसा न करना चाहिये यह बड़े विद्वानों व योगियों को भी धोखे में डाल देती है.

दिलीप देवनानी, आगरा

पावन-प्रसंग

एक सेठ के पास राम नाम का लड़का नौकरी करता था. सेठ उसको बहुत गाली देता था. वह किसी संत के पास गया और अपनी बात सुनाई. संत ने कहा - अपना नाम बदली करके श्याम रख, राम को गाली मिले तो तू समझना मैं तो श्याम हूँ. तब से सेठ जब भी गाली दे उसे लगे नहीं और वह बहुत प्रसन्न रहने लगा. सेठ के कारण पूछने पर वह बोला मैं श्याम हूँ आप तो राम को गाली देते हैं, मुझे थोड़ी.

सिद्वान्त : अपने को देह समझते हैं तो सब बातें लगती हैं.

एक संत के पास सम्राट आया उसने संत से पूछा - संत जी स्वर्ग नर्क क्या है? तो सन्त ने पूछा तुम हो कौन ? राजा ने कहा - मुझे पहचानते नहीं, मैं इतनी बार आ चुका हूं. मैं राजा हूँ. सन्त ने कहा - तुम शक्ल से तो भंगी दिखते हो. तो राजा ने क्रोध में सन्त को मारने के लिए तलवार निकाली. सन्त ने कहा - ये है नर्क. थोड़ी देर में राजा का विवेक जागा कि मैं क्या करने जा रहा था - उसने सन्त के पैर छूकर माफी माँगी. सन्त ने कहा - यह है स्वर्ग.

सिद्वान्त : अपने को झुकाना है स्वर्ग, अहंकार करना है नर्क.

तंदुरुस्त रहें

खरी-खरी बातें

भूख न लगना, बीमार होने की निशानी है, इसलिये हफ्ते में एकदिन उपवास रखना और कुछ दिन साग सब्जी और गाजर का सेवन करें और फल फ्रूट का भी इस्तेमाल करें ताकि आपके आंतड़ियों में जमा फालतू कचरा साफ हो और आप तंदुरूस्त हो जावें. वैसे भी घर का मालिक खुली जगह पर दो घंटे तक आसन प्राणायाम करे तो उसे कभी अपने रसोइये को बुरा भला न कहना पड़े अगर हर रोज रात को सोते समय कानों में थोडी सी रूई रख लिया करें और सुबह निकाल दिया करें तो कानों में कभी कोई बीमारी नहीं होगी.सर में बार बार कंगी करने से खराब आंखे ठीक होती हैं, पेरों के तलवे साफ रखने से दिमाग साफ रहता है इसीलिये नहाते वक्त किसी ईंट के टुकड़े या खुरदरे पत्थर से रगड़कर तलवे साफ करें.

गुलाबी रंगत लिये नाखून वाले होते हैं अच्छी सेहत वाले

गर्भवती और दूध पिलाने वाली माता के दांत खराब होंगे तो बच्चे की सेहत खराब होगी. इसीलिये मातायें पहिले जमाने में मुसाग (मिसवाग) से दांत साफ करती थी. बड़े लोगों का कहना है तम्बाकू का सेवन आंखों के लिये खराब नाक के लिये नफरत दिमाग के लिये नुकसान कारक और फेफड़ों के लिये खतरनाक है. रात में ज्यादा खाकर सोने से हाजमा खराब हो जाता है. खाना खाने के बाद फौरन पेशाब करना चाहिये ताकि जिगर के दर्द और कमर के दर्द से हमेशा सुरक्षित रहें. खाना हजम होने से पहले दूसरा खाना हरगिज न खायें. क्योंकि उसका दिल पर बहुत खराब असर पड़ता है और गुस्से की हालत में खाना खाने से बदहजमी हो जाती है. बदहजमी ही बीमारी की जड़ है खाना खाने और मेथुन के बाद पानी हरगिज नहीं पीना चाहिये. बगैर जरूरत कभी दवा का सेवन न करें. मामूली बीमारी में दवा के बजाय खाने में फेर बदल करें तो अच्छा होगा.

दमे के बीमार को रात का खाना नहीं खाना चाहिये इस तरह मरीज को आराम रहेगा और नींद अच्छी आएगी.अगर जीवन प्यारा है तो ज्यादा भोग विलास से बचना चाहिये. भोगों से रोग हो जाते हैं और जिंदगी भार हो जाती है. बार बार सर में कंगी करने से सर का दर्द दूर हो जाता है. जिस इन्सान को ज्यादा थूकने की आदत हो उसका चेहरा बहुत कमजोर हो जाता है और चेहरे पर रौनक खत्म हो जाती है इसीलिये अपनी थूक (राल) को पीते रहना चाहिये तो ताजगी रहेगी. जब जरूरी नित्य शौचकार्य के लिये जायें तो जब तक निपट न लें तब तक दातों को भींच कर जमा कर वहां बैठें, ऐसा करने से दांतो के दर्द की कभी शिकायत न होगी और दांत मजबूत रहेंगे. अगर दांत कुछ कमजोर हो गये हों तो सहदंत प्राणायाम करें, जिसका तरीका यह है कि सुबह और रात में दांतों को भींचकर होठों को थोड़ा खोल कर सी सी करके हवा भरें और नाक से छोड़ दें, ऐसा ५ से ६ बार करने से हिलते हुए दांत भी मजबूत हो जाते हैं. मगर विश्वास रखना जरूरी है. वजनी चीज को एक जगह से दूसरी जगह रखने की आदत डालने से बवासीर कभी नहीं होगी, अगर है तो मिट जाएगी जिस चीज को उठाने में ताकत लगे वह चीज याने बड़ा सा पत्थर वगैरह.

बरफ से पानी ठंडा करके पीने से आदमी की उमर कम होती है इसलिये मटके का पानी पीना चाहिये. नाखूनों का जल्दी बढ़ना अच्छी सेहत की निशानी है और नाखूनों की रंगत गुलाबी हो और नाखूनों की जड़ों में अर्ध चंद्रमा जैसा सफेद निशान हो तो समझो आपकी सेहत ठीक है. सुबह जागते ही रात को ढांप कर रखे हुए पानी के आठ घूंट हथेली पर डाल डाल कर आचमन की तरह पी लिये जायें तो आदमी बीमारी और बुढ़ापे से बचा रहता है और १०० साल से भी ज्यादा जीता है यह एक बुजुर्ग का कहना है. खाना खाकर हाथों को धोकर फिर गीले हाथ मलकर आंखों पर फेरें, ऐसा करने से आंखों की बीमारियां दूर होती हैं, और तकलीफ नहीं होती. बाकी अगले अंक में

नारायणदास तेजूराम हेमराजानी, अमरावती

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्तमण्डली का देशाटन

यात्रा-दर्शन

नन्द नगर ब्यावर में सदगुरू टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिकोत्सव १० से १४ अप्रैल तक बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया.

अमरापुर रथ में परम पूजनीय सदगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का शुभागमन ११ अप्रैल को दोपहर ११.३० बजे हुआ. पूज्य गुरूदेव भगवान के पधारने पर ब्यावर आश्रम के व्यवस्थापक सन्त भोलाराम के साथ ट्रस्टीयों, दादी सती, दादी कमला व ब्यावर अजमेर के हजारों प्रेमियों ने महाराजजी का उत्साहपूर्वक पुष्पवर्षा करके व पुष्पमालाऐं पहिनाकर सदगुरू देव की गगनभेदी जय जयकार के साथ आत्मीय स्वागत किया. पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार पुराने बस स्टेण्ड से पूज्य गुरू महाराज जी की स्वागत शोभायात्रा निकाली गयी. एक सजे हुए रथ में पूज्य श्री शोभायमान थे. उसके पीछे ५१ महिलायें एक सी वेश भूषा पहिने कलश लिये शोभायात्रा का विशेष आकर्षण थीं. बैण्ड, शहनाई की मधुर धुनों पर उल्लासित प्रेमी नाचते नाचते गुरू भक्ति में तल्लीन हो रहे थे. दोपहर १ बजे आश्रम पर शोभायात्रा का विसर्जन हुआ.

११ से १४ अप्रैल तक प्रतिदिन प्रातः सायं पूज्य श्री के दिव्य सत्संग दर्शन का लाभ ब्यावर व समीपस्थ क्षेत्रों के प्रेमियों ने बड़े मनोयोग से लिया. इसी मध्य दादी सती, दादी कमला के यहां प्रेम प्रकाश महिला आश्रम में भी पूज्य स्वामीजी के सत्संग दर्शन का लाभ प्रेमियों ने लिया. चांग गेट चौराहे ब्यावर में नव निर्मित फव्वारों का लोकार्पण भी स्वामी जी के कर कमलों से हुआ. यहा पर सदगुरू स्वामी शान्ति प्रकाश सेवा समिति द्वारा स्वामी जी का अभिनन्दन किया गया. पूज्य स्वामी जी के साथ स्वामी मनोहरप्रकाशजी, स्वामी हरिओमलाल जी, सन्त दयाप्रकाशजी, भगत मूलचन्दजी, भगत शंकरलालजी एवं जयपुर से दादी चेता मण्डली भी ब्यावर आश्रम के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुई एवं अपनी मीठी वाणी से ब्यावर वासियों को लाभान्वित किया.

सदगुरू महाराजजी की अमृतवाणी

सदगुरू महाराज ने हमें समझाया कि प्रभु परमात्मा को प्राप्त करने का सबसे सरल साधन है-संत महापुरूषों का सत्संग एवं नाम सुमरन करना. आगे सद्गुरू महाराजजी ने हमें समझाया कि सुख शान्ति का भंडार हमारे अन्दर ही है- भजन

रे मन मेरा भटकत काही, जो सुख चाहत सो तुझ माहीं
मृग की नाभि है कस्तूरी, अपने से वह जानत दूरी
ढूंढत वन वन मिलत न काहीं

दोहा : सोए अविद्या नींद में कहे टेऊँ बहुकाल.
अब तो गफलत छोड़ के सुमरो दीनदयाल..

भजन

जहिं अविद्या कंगाल बणायो, घर में हूंदे दौलतजे.

कृपा करके तहं कपटी खे कटे सटे काफूर कयो
सदगुरू स्वामी अर्न्तयामी अर्जु मुहिंजो मंजूर कयो

सदगुरू महाराज हमें बतलाते हैं कि सुख शान्ति का खजाना हमारे अन्दर ही है परन्तु अविद्या अज्ञानता के कारण हम उस खजाने को ढूंढ नहीं पा रहे हैं जैसे मृग की नाभि में सुगन्ध की कस्तूरी होती है उसे वह अपने आसपास इधर उधर जंगल में अज्ञानता के कारण ढूंढता रहता है उसी तरह हमारे मन के अन्दर सुख शान्ति का भंडार होने पर भी हम अज्ञानता के कारण उसे प्राप्त करने के लिये इधर उधर भटकते रहते हैं.

हमारे अनेक जन्म हो चुके हैं हमें उसका भी ज्ञान नहीं है. इस अज्ञानता को दूर करने हेतु हमें गुरू की शरण में जाना चाहिये गुरू ही हमें नाम सुमरन द्वारा इस अज्ञानता को दूरकर हमें नींद में से जगाकर प्रभु परमात्मा को प्राप्त करने की राह दिखलाता है. गुरू महाराज ने एक दृष्टान्त द्वारा हमें समझाया कि एक

राजकुमार था जिसके हाथ में करोड़ों के हीरे जवाहरात का कंगन पहिना हुआ था रात को अपने शयन के कमरे में खिड़की दरवाजे बन्द कर राजकुमार हाथ में कंगन पहनकर सो गया. सोने में शरीर के इधर उधर करने से कंगन बांह में ऊपर चढ़ता चढ़ता बांह के ऊपर बाजू में चढ़ गया. सुबह जब राजकुमार उठा उसने अपनी हाथ की कलाई में कंगन पहिना नहीं देखा तो चिल्लाने लगा, मेरा कंगन चोरी हो गया है जबकि कमरे के सारे खिड़की दरवाजे अन्दर से बन्द थे. तब उसी समय एक संत महापुरूष पधारे उन्होंने सारा वृतान्त सुना. तब उसने राजकुमार के सारे शरीर को टटोला तो कंगन उपर बांह की भुजा में था. इसी तरह हमारे शरीर के अन्दर ईश्वर की शक्ति सुख शान्ति का खजाना भरा पड़ा है जिसे हम इधर उधर ढूंढते रहते हैं जिसका ज्ञान हमें संत महापुरूष गुरू महाराज कराते हैं गुरू महाराज नाम सुमरन द्वारा हमारे मन को निर्मल पवित्र बताकर उसमें प्रेम रस भरकर प्रभु परमात्मा को प्राप्त करवाकर इस जीवनके जन्म मरणके चक्र से छुटकारा दिलवाते हैं.

मोहन शिवनानी, अजमेर से

गर्व हुआ काफूर

महाभारत काल की घटना है. अर्जुन को सबसे बड़ा भक्त होने का गर्व हो गया है. श्रीकृष्ण अर्जुन को लेकर निकल पडे. रास्ते में एक ऐसे ब्राह्मण को देखा जो नयन मूंदे बैठा हुआ सूखी घास खा रहा था. आसपास सभी जगह हरी घास होने के बाद भी सूखी घास खाने के बारे में अर्जुन के पूछने पर कृष्ण ने कहा कि सूखी घास खाने में चैतन्य भाव लुप्त हो जाता है. अर्जुन की दृष्टि सहसा ब्राह्मण की कमर में लटक रही तलवार पर पड़ी. अर्जुन ने फिर प्रश्न किया.

कृष्ण ने कहा इस विषय में भला मैं क्या बताऊं? तुम स्वयं ही उनसे क्यों नहीं पूछ लेते? अर्जुन ने विनम्र भाव से पूछा हिंसा का सबसे बड़ा प्रतीक तलवार आपके पास है.

ब्राह्मण ने कहा इससे मुझे चार लोगों को काटकर समाप्त करना है. किस किसको? अर्जुन ने पछा. सबसे पहले उस दुष्ट नारद को, जो न दिन देखे, न रात, जब चाहे गाते बजाते आए और मेरे भगवान को जगा दे. दूसरा दुष्ट प्रहलाद वह तो पूरा पाजी है. धूर्त ने मेरे भगवान की मक्खन जैसी कोमल देह को कठोर स्तंभ के भीतर से निकलने पर बाध्य कर दिया. ब्राह्मण दांत भींचता हुआ बोला.

तीसरी, वह दुष्ट द्रोपदी है, जिसकी इतनी हिम्मत कि जब मेरे भगवान भोजन करने बैठें तभी उनको बुलाकर भोजन नहीं करने दिया.

चौथा वह अर्जुन, उसका इतना दुःस्साहस कि त्रिलोक स्वामी, परब्रह्म जगतपालक मेरे प्रभु को अपना सारथी ही बना डाला. उसको तो मैं किसी भी अवस्था में नहीं छोडूंगा. ब्राह्मण की वाणी कठोर से कठोरतर होती जा रही थी. ब्राह्मण के भक्ति भाव की गहराई को देख अर्जुन का गर्व चूर-चूर हो गया.

लालच बुरी बला

एक बार दो यात्री देर हो जाने के कारण एक पटेल के यहां रात को रूक गए. उनकी पैसों की थैली देखकर पटेल की नीयत बिगड़ गई, और उसने गुंडो को बुलाकर दरवाजे पे सोते दोनों यात्रियों को रात में मार देने को कहा. पटेल के दोनों पुत्र जो रात को खेत में ही सोने वाले थे, वापस आ गए और पलंग पर दो अनजान आदमियों को देखकर उन्हें डांट कर उठा दिया और खुद वहां सो गए. रात को गुंडे आए और दोनों पुत्रों को मार डाला. सुबह दोनों यात्री जाने लगे और दरवाजे पे खून की धार देखकर पटेल को उठाया, और उसने पाया कि उसके दोनों बेटे मर चुके हैं. पटेल का पाप उसके ही सिर पर पड़ा.

सिद्धान्त : जैसी करनी वैसी भरनी. लालच करें ही क्यों. लालच में अपनी ही बरबादी है.

84 लाख योनि के चक्कर को मिटाने वाला 84वाँ चैत्र मेला
श्रद्धा भक्ति-भाव से उल्लासपूर्वक सम्पन्न

प्रेम प्रकाशियों का पारम्परिक मेला है - चैत्र मेला, यह मेला हमारे प्रेम प्रकाशियों के मंगलमूर्ति आचार्य श्री सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित किया गया था. उस समय भी महाराज जी बड़े आकर्षक व भव्य ढंग से इस मेले को सन्तों महात्माओं के साथ मनाते थे तो भला हम आचार्यश्री के शिष्य उनकी परम्परा को कैसे भूल सकते हैं.

८४ सालों से चली आ रही गुरू महाराज की परम्परा को आज हमारे प्यारे सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज मना रहे हैं. यह ८४वां मेला जीव को ८४ लाख योनी के चक्कर से मुक्त करवाने वाला है, जिस प्रकार यह बात सिद्ध हो चुकी है कि अगर कोई मनुष्य परमात्मा के स्मरण में अपना जीवन बिता देता है तो ८४ लाख योनी के चक्कर से मुक्त हो जाता है. उसी प्रकार आज अगर कोई मनुष्य इस ८४ वें चैत्र मेले का दीदार अपने नेत्रों से कर ले तो वो भी इस ८४ लाख योनियों के चक्कर से मुक्त हो जायेगा.

इस महान ८४ वें चैत्र मेले की तैयारी लगभग एक माह पहले से ही हो रही थी सन्त मोनूरामजी व प्रेमीगण एकजुट होकर इस अमरापुर धाम को सजाने में लगे हुये थे. वहीं दूसरी और माताऐं भण्डारे के सामान की तैयारी में लगी हुई थीं. श्री दरबार का बाहरी परिसर व बाहरी द्वार को कलात्मक रूप से नवीन रंगो द्वारा आर्कषक बनाया गया था. वहीं परिसर में बने अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर व स्वामी गुरूमुखदास जी महाराज की समाधि स्थल पर भी नवीन रंगों की सजावट की गई थी. वहीं सत्संग परिसर की बाहरी दीवार पर नवीन दोहों व श्लोंकों को लिखा गया. सत्संग परिसर के ऊपर बने गुम्बद को भी नवीन रूप दिया गया. देखा जाए तो पूरा का पूरा श्री दरबार नवीन रंगोंसे मनमोहक लग रहा था.

८४ वें चैत्र मेले क़ी तैयारियां जोर-शोर से चल रही थी तैयारियां तो खत्म होने वाली नहीं क्योंकि जितनी भी तैयारियां की जाऐं वह कम ही है इस विशाल मेले के लिये. आखिर २१ अप्रैल स्वामी गुरूमुखदासजी महाराज के वर्सी उत्सव से इस दिव्य मेले की शुरूआत हुई.

स्वामी गुरूमुखदास वर्सी उत्सव 21 अप्रैल

प्रातःकाल सत्संग प्रवचन के पश्चात् पाठ साहब के भोगों के बाद स्वामी गुरूमुखदासजी महाराज के प्रवचन की कैसेट्स चलाई गई. तत्पश्चात् सन्तों द्वारा ८४ लाख योनि को काटने के लिये लगे ८४ वें चैत्र मेले के उपलक्ष में श्रीमद्भगवत गीता व श्री प्रेमप्रकाश ग्रन्थ साहब के पाठ रखे गये. लगभग १२ बजे तक चले इस सत्संग कार्यक्रम के पश्चात् विशाल ब्रह्मभोज एवं भण्डारा हुआ, जिसमें ब्राह्मण समाज व प्रेमियों ने प्रसादी ग्रहण की. फिर पुनः शुरू हो गई मेले की तैयारियां. बाहर से प्रेमीगण बडी संख्या में तीन चार दिन पहले ही आ चुके थे. प्रेमीगण अपनी निर्धारित सेवाकार्यों में व्यस्त थे. शाम को आचार्य स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन चरित्र की सी.डी.बड़ी स्क्रीन पर दिखाई गई.

22 अप्रेल 2005 चैत्र मेला शुरू

प्रातः सत्संग सभा ७ से १० बजे तक : सर्वप्रथम सन्त शम्भूलाल ने प्रार्थना का भजन (आशवन्दी गुर तो दर आई) मधुर व संगीतमय स्वर से केसियो पर गाया तत्पश्चात् सन्त नरेशलाल (इन्दौर) ने चैत्र मेले का परिचय इस प्रकार दिया.

चैत्र मेला : एक परिचय

अमरापुर दरबार टंडे आदम (सिन्ध) में आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने आज से ८३ वर्ष पूर्व अपने कर-कमलों के द्वारा इस मेले की स्थापना की. भारत विभाजन के बाद यह मेला कुछ साल तक

अन्य शहरों में फिर स्थाई रूप से अमरापुर स्थान, जयपुर में लगाया जाने लगा.प्रेम प्रकाश मंडल के सभी मेले पंचदिवसीय मनाये जाते हैं मगर यह लाड़ला व निराला मेला चार दिवसीय होकर भी ८४ घंटे का मनाया जाता है. सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने एक बार फरमाया था कि सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा था कि जो भी इस ८४ घंटे के मेले में ८४ घंटे भजन व भोजन के भंडारे में सम्मिलित रहेगा उसकी चौरासी कट जायेगी. तो आइये समझ लें कि यह ८४ घंटे का मेला कैसे हुआ. टंडे आदम दरबार से दोपहर ३ बजे विशाल शोभायात्रा निकाली गई जो शहर में से होती हुई शाम ७ बजे दरबार पर वापिस पहुंची और सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने पल्लव पाकर मेले का शुभारम्भ किया तो पहले दिन शाम ७ बजे से चौथे दिन शाम ७ बजे तक (३ दिन) ७२ घंटे हुए फिर शाम ७ बजे से सुबह ७ बजे तक १२ घंटे हुए तो ७२ घंटे + १२ घंटे बराबर ८४ घंटे हुए. सुबह ७ बजे सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने पल्लव पाकर इस मेले का समापन किया.इस प्रकार यह मेला उसी परंपरा को जीवंत रखे हुये ८४ घंटे का निरन्तर ८४वें वर्ष में भी मनाया जा रहा है.

श्री सत्यनारायण कथा का विमोचन

एक प्रेमी द्वारा छपवाई गई श्री सत्यनारायण कथा का पूज्य श्री के पावन कर कमलों द्वारा विमोचन करवाकर प्रेमियों में निःशुल्क वितरण किया गया.

श्री गुरूदेव के मुखारविन्द से ज्ञान गंगा

श्री गुरू महाराज ने सरल व ज्ञानमयी वचनों के द्वारा फरमाया कि गुरू कृपा मांगने से नहीं बल्कि अन्तःकरण की निर्मलता से सहजे ही प्राप्त होती है. इसके लिए पहला साधन गुरू मूर्ति का ध्यान व नाम का सुमरन है.

तुमसा दयालु, जग में, दूजा कहां मिलेगा
दुख दर्द के मारों के, आंसुओं को पोंछ लेगा
पल पल करू मैं पूजा, बन कर तेरा पुजारी
गुरूदेव ज्ञान दाता, तुम्हें वन्दना हमारी
स्वामी टेऊँराम बाबा, विनती सुनो हमारी
जो कोई आवत है उनके ढिग ताहि सुनावत शब्द संदेशो

इस प्रकार नाम का संदेश देकर सत्संग समाप्त किया।

नई ऑडियो कैसेट व सी.डी. का लोकार्पण

टी सीरीज द्वारा प्रस्तुत प्रथम वीसीडी कैसेट साई टेऊँराम लीला तेरी तू ही जाने का विमोचन पूज्य श्री, स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाशजी महाराज, स्वामी अनन्तप्रकाशजी द्वारा संयुक्त रूप से व **पल पल मां प्रीतम तोखे पुकारियां** आडियो कैसेट जो कि श्री गुरूदेव के मधुर स्वर में है, का भी विमोचन सन्त मण्डल द्वारा किया गया. **स्वामी टेऊँराम जीवन दर्शन** वी.सी.डी. व **सत्संग संग्रह** एम.पी.3 का भी विमोचन किया गया.

श्री अमरापुर यज्ञ शाला में हवन

सत्संग पश्चात् गुरू महाराज, सन्त महात्मा मंडल व अमरापुर विद्यार्थी मंडल द्वारा मेले के उपलक्ष में पूज्य ब्राह्मण श्री द्वारा हवन करवाया गया व विद्यार्थियों द्वारा श्री भगवत् गीता व गुरू महिमा के श्लोकों के उच्च स्वर से उच्चारण के साथ सन्तों ने ब्राह्मण देवता द्वारा आवाहन किए गए सभी देवताओं के मुख में (यज्ञ अग्नि में) आहुतियां डाली. पंचम पातशाही द्वारा पूर्णाहुति देने के पश्चात् सर्व महात्माओं ने ध्वजस्थल की ओर प्रस्थान किया.

मेले का गगनचुम्बी ध्वजा वन्दन

श्री प्रेम प्रकाश मंडल का सबसे उंचा ध्वज स्तम्भ जहां अमरापुर के जोगियों द्वारा प्रेम प्रकाश ध्वजा की वैदिक मन्त्रोच्चारण द्वारा पूजा अर्चना करके सन्त नन्दलाल द्वारा स्तम्भ के शिखर पर जाकर झंडा फहराया गया व श्री फल तोड़कर प्रसाद व पुष्पों की वर्षा की, गुब्बारे उड़ाए गए. **हम गीत सनातन गायेंगे, स्वामी टेऊँराम तुंहिजों झण्डो झूले, मुंहिजो स्वामी टेऊराम थईअ** खण्डू वारो के सामूहिक स्वर द्वारा आकाश भी गुंजायमान हो उठा.

विशाल आम सामूहिक भंडारा

ध्वजा वन्दन के बाद श्री सतगुरू भगवान ने

पूजनीय सन्त मंडल भगत जन व आम संगत के साथ पंगत में बैठकर भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया. यह परम्परागत दृश्य चारों दिन तक चलता रहा.

सद्गुरू टेऊँराम की महान शक्ति का चमत्कार

जयपुर की गर्मी को देखते हुए बाहर से आए प्रेमीगण विशेषकर विदेश से आए मेहमान कह रहे थे कि इतनी कड़ाके की धूप में दोपहर के ३ बजे वो भी पैदल ही पैदल कैसे चल पायेंगे. अन्तर्यामी, घटघटवासी भक्त वत्सल दया के सागर गुरूदेव ने उन प्रेमियों की पुकार सुनकर आसमान में ऐसी बादलों रूपी छतरी बना दी कि पूरे जयपुर में धूप का नामों निशान तक नहीं रहा.

सद्गुरू टेऊँराम तेरी मैने देखी महान शक्ति

आगे-आगे जुलूस में मनमोहक झाकियां सुन्दर बैण्ड, प्रकाश बैण्ड, जीया बैण्ड की मधुर ध्वनियों, श्री राम धुनि हरी नाम संकीर्तन यात्रा में शकर गैस लाइट हाउस द्वारा शोभायात्रा में लाइटिंग की उत्तम व्यवस्था, पीछे-पीछे पूज्य गुरूदेव के साथ प्रेम प्रकाश मंडल के सभी सन्तगण पैदल चल रहे थे. पूरे मार्ग में आने जाने वाले राहगीर भी इस विशाल जुलूस को देखकर उत्साहित हो रहे थे. जब उन्होंने देखा कि इतने बड़े पन्थ के महाराज श्री बिना किसी सवारी के पैदल जा रहे हैं तो वह नतमस्तक होकर महाराज श्री का अभिनन्दन करने लगे. जगह जगह स्वागत द्वार बनाये गये थे जुलूस में दिल्ली मलकागंज के माखन चोर की सजीव झांकी और ब्यावर से आई सेठ किरोड़ीमल की बारात ज्यादा सराही जा रही थी इनके अलावा गुफा में आचार्यश्री का नाम जपने, संत कंवरराम की झांकी के अलावा और भी कई झांकीयां थी. जौहरी बाजार फल व्यवसायी संगठन की तरफ से मार्ग में भगवान शिव की मनोहरकारी झांकी सजाई गई थी. भक्तगण महाराजश्री के सानिध्य में सद्गुरू भगवान की जयजयकार करते हुये चल रहे थे. आज सूर्य देवता की तपन शीतलता का अहसास दे रही थी. इसको देखकर लग रहा था कि आचार्यश्री अपने प्रेमियों का इतना ध्यान रखते थे. मार्ग में श्रद्धालुओं द्वारा जगह-जगह पर सन्तों पर पुष्प वर्षा करके स्वागत किया जा रहा था, शीतल जल, शरबत, आइसक्रीम, फलों के जूस व प्रसाद आदि का वितरण खुले दिल से किया जा रहा था.

शोभायात्रा मार्ग में प्रवेश द्वार

भक्तों, श्रद्धालुओं व स्वागतकर्ताओं द्वारा शोभायात्रा में बनाये गये अनेक स्वागत द्वारों में निम्नलिखित द्वार बड़े ही सुन्दर ढंग से बनाये गये - स्वामी टेऊँराम द्वार, स्वामी सर्वानन्द द्वार, स्वामी शान्तिप्रकाश द्वार, स्वामी हरिदासराम द्वार, सत्नाम साखी द्वार. इन द्वारों में से जब सत्गुरू महाराज व सन्त मंडल गुजर रहा था तो मानो ऐसा लग रहा था कि कृष्ण भगवान गोप ग्वालों के साथ वैकुण्ठ में से वृन्दावन की तरफ आ रहे हों. बड़ा ही लुभावना दृश्य बन रहा था.

लगभग ८ बजे शोभायात्रा अमरापुर स्थान पहुंची तत्पश्चात् सद्गुरू महाराज ने ज्ञानामृत पिलाया "जैसे समुद्र में चलते जहाज पर बैठा कौआ अगर उड़कर जाना चाहे तो थोड़ी देर इधर उधर उड़कर वापिस जहाज पर ही आयेगा क्योंकि चारों तरफ पानी ही पानी होता है उसी प्रकार जिज्ञासु संसार रूपी समुद्र में नाम रूपी जहाज पर सवार होता है तो उसका आधार केवल जहाज ही होता है. सद्गुरू टैऊँराम महाराज ने यह मेला शिष्यों को पार पहुंचाने के उद्देश्य से ही शुरू किया था. इस प्रकार मेले का उद्देश्य बताकर पल्लव पाकर मेले का शुभारम्भ किया व केक काटा.

शनिवार 23 अप्रैल आचार्यश्री का अवतरण दिवस पर अपार जन सैलाब उमड़ा

आज तो बड़ा ही पवित्र दिन था एक तो चैत्र मेले का द्वितीय दिन दूसरा आचार्यश्री सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज का जन्मवार शनिवार प्रातः ५ बजे जब श्री दरबार में प्रवेश किया तो मधुरकारी धुनियों को सुनकर हृदय प्रेमानन्द की उड़ान भरने लगा और कान धुनियों को सुनते-सुनते उस हरिनाम संकीर्तन की फेरी मे पहुंच गये. जहां ये फेरी थी, मेले की परम्परा के साथ प्रभात

फेरी भी चली आ रही है, प्रभात फेरी का दर्शन करने के पश्चात् जब सत्संग स्थल में प्रवेश किया तो भक्त समुदाय को सत्संग स्थल पर शोभायमान पाया.प्रार्थना के स्वर भी श्री दरबार में उच्चारित हो रहे थे जो कान में मिश्री की तरह घुले जा रहे थे.

आज श्री दरबार के बाहरी परिसर में बने बगीचे में एक तरफ माताओं व दूसरी ओर पुरूष वर्ग के लिये स्वामी जी की पुस्तकें, कैसेट, स्टीकर, व प्रेम प्रकाश संदेश के स्टॉल लगे हुये थे.

आज की सत्संग सभा में सन्त प्रतापराय ने ८४ वें मेले के उपलक्ष में उदाहरण देते हुए समझाया कि

लाख चौरासी भोग के, पऊं में अटकी आय
तुलसी पऊं ना चूकिए, फिर चौरासी जाय

जैसे लूडो खेल में ८४ खाने होते हैं व ४ घर होते हैं तो जो गोटी ८४ खाने चक्कर चलकर अपने घर में प्रवेश करते समय पऊं के लिए अटक जाती हैं और पीछे से दूसरी गोटी आकर उसको मार देती है तो उस गोटी को फिर चौरासी खाने घूमकर वहां तक पहुंचना होता है। गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज लिखते हैं कि **तुलसी पऊं ना चूकिए** मनुष्य योनि भी ४ खानियों में ८४ भोगकर किनारे पर अटकी है अगर पऊं से पार हो गए. पऊं है बिन्दु, उस पर मन को एकाग्र करके संसार रूपी पऊं से पार होना है नहीं तो फिर ८४ भोगनी पड़ेगी, यह मेला चौरासी काटने के लिए ही लगाया जाता है.

प्रेम प्रकाश संदेश के प्रेम महिमा अंक का विमोचन

श्री गुरूदेव के पावन कर कमलों द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश के अप्रैल महीने के अंक प्रेम महिमा विशेषांक का विमोचन तालियों की गड़गड़ाहट व जयकारे के साथ किया गया. सभी सन्तों व भक्तों ने इस विशेष अंक की हृदय से सराहना की.

सद्गुरू महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा कि जैसे ड्राइवर चाहे तो मोटर गाड़ी को आगे की तरफ चलाये और चाहे तो पीछे की तरफ चलाये इसी तरह मन रूपी ड्राइवर के द्वारा शरीर रूपी गाड़ी को चाहे तो आगे की ओर (ईश्वर की ओर) चलाये और चाहे तो पीछे की ओर (पतन की ओर) चलाये। मन अपनी पर आ जाय तो किसी की सुनता नहीं, अगर सुन लेता है तो समझता नहीं, अगर समझ भी लेता है चलता नही और चल पड़े तो बेड़ा पार हो जायेगा इसके लिए निरन्तर गुरूदेव को प्रार्थना करनी चाहिए।

सद्गुरू टेऊँराम का कह न सकूं उपकार
सोवत मोहि जगायके कीना भव से पार

गुरू प्रार्थनाष्टक व सत्नाम साक्षी माला

हर गुरूवार व शनिवार को सुबह सत्संग पश्चात् गुरू प्रार्थना अष्टक व सत्नाम साक्षी का जाप १०८ बार किया जाता है जो कि आज भी किया गया. सांयकालीन सत्संग सभा में रेडियो सिंगर भक्त वीरभानदास ने अपनी कोयल जैसी मीठी व सुरीली आवाज में **प्रेम बढ़ा ले प्रेम गुरू से प्रेम** भजन गाकर धूम मचा दी.

प्रसिद्ध सिन्धी गायक कलाकार भजन गायिका कमला केसवानी ने **आयो मेलो चेट जो आयो, सभई सत्गुरू जीं जय – जय मनायो** भजन द्वारा प्रेमियों के मन को मोह लिया.

सत्गुरू महाराज ने प्रेम की बौछार करते हुए कहा कि प्रभू परमात्मा को अनन्य भक्ति प्यारी लगती है जैसे भक्तिमयी मीरा ने **मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई** व सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने **चवनि मुरशिद मांण्हू तव्हां लइ आहे, पर मूं लइ सच्चो अल्लाह आहे** व सदगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने **सदगुरू टेऊँराम के बिन और न कोई मुझे आधारा** संसार के सभी सहारे छोड़कर एक ही आधार लिया हमें भी उनके बताए मार्ग पर चलकर अपना कल्याण करना चाहिए.

सतगुरू महाराज के श्रीविग्रहों का अभिषेक

प्रेम प्रकाश मंडल के सन्तों व बाहर से पधारे विशेष मेहमानों की उपस्थिति में प्रातः ६.३० बजे पूज्य श्री व स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के द्वारा सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज व सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द

जी महाराज के श्रीविग्रहों को पावन गंगा जल से स्नान कराके नई पोशाकें पहनाई गई व वेद मन्त्रों द्वारा पूजा-अर्चना की गई इसी प्रकार भगवान लक्ष्मी नारायण के श्रीविग्रहों की भी पूजा-अर्चना की गई.

अमरापुर विद्यार्थी मंडल द्वारा प्रस्तुति

सन्त मोनूरामजी के निर्देशन में विद्यार्थियों ने बड़े ही रोचक ढंग से सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज के नवीन भजनों की संगीतमयी प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया.

स्वामी ग्वालाराम दरबार अजमेर के महन्त स्वामी चेतन कृष्ण ने कहा कि

सदगुरू टेऊँराम चयो ग्वालानन्द खे,
कलजुग जोर जगाए थो
करम धरम खां फेरे सभ खे,
उल्टा नाच नचाए थो ।

आज की सत्संग सभा में सन्त मनोहरलालजी ने गुरू नाम की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि **जप साखीं सत्नाम रे तेरे काज सरेंगे** जन्म जन्मान्तर से जो हमारा काज अधूरा पड़ा है, इस जन्म में सत्नाम साखी का जाप जपकर उस कार्य को पूरा करना है.

मेले का सच्चा प्रसाद

सतगुरू महाराजजी जब सत्संग की मौज में आए तो उन्होंने अपने कोमल नवनीत समान हृदय से मोती समान वचनों को बिखेरना शुरू कर दिया **सतगुरू साफ सुणायो, भरम मिटायो, ज्ञान जीं जोत जगायो, किथे वसे थो करतार** जागा हुआ मन इन्हीं बातों का विचार करता है. सन्तों के संग में आकर हमारा सोया हुआ मन जाग जाय तो यही हमारे लिए मेले का प्रसाद होगा. यह कभी खुटता नहीं. इसके द्वारा ऐसी कृपा होगी कि हमारा लोक व परलोक दोनों संवर जायेंगे.

गुरूदेव भगवान ने आगे कहा कि मन विचारों का पुंज है. जैसे विचार चलेंगे वैसा ही मन बनता जायेगा इसलिए गुरू के उपदेश द्वारा मन में सुविचारों का प्रवेश करायेंगे तो मन सही दिशा में चल पड़ेगा.

सद्गुरू टेऊँराम मिठो, दर्शन जहिंजो सभ ख्वां सुठो
सभ दुखड़ा दरद निवारे, तुहिंजा सतगुरू कारिज संवारे,
हलु अमरापुर में प्यारे तुहिंजा सतगुरू कारिज संवारे

पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की.

२४ अप्रैल को रात्रिकालीन सत्संग के पूर्व स्वामी टेऊँराम पोलो क्लीनिक के डॉक्टर एस.एल.तोलानी, डॉ. एस.एम.शर्मा, डॉ. हरपलानी, डॉ. एम.डी.हुकमानी, डॉ. मधु गुप्ता, डॉ. एस.एन.अग्रवाल, डॉ. जेसवानीजी व सहयोगियों दादा लेखराज मेघानी, दादा हीरालाल बालानी एवं व्यवस्थापक ट्रस्टी श्री तुलसीदास मनवानी, किशनचन्द वाधवानी, लक्ष्मणदास वाधवानीजी को पाखर पहनाकर सद्गुरू महाराजजी द्वारा आशीर्वाद दिया गया.

25 अप्रैल, सोमवार

अन्य सन्तों के सत्संग पश्चात् चैत्र मेले के उपलक्ष में रखे गये श्री मद्भगवत व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहिब का भोग डाला गया. फिर श्री गुरूदेव ने मन की स्थिति को समझाते हुए कहा कि राकेट आकाश में इतना ऊपर उड़ जाता है कि वहां पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति समाप्त हो जाती है ठीक उसी प्रकार हमें भी मन को संसार से इतना ऊपर उठा लेना चाहिए कि संसार की मन के प्रति आकर्षण शक्ति समाप्त हो जाय तभी मन को शान्ति मिल सकती है.शान्ति का पथ दिखाते हुए पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया.

अमरापर दरबार में इन्द्र देवता का आगमन

कहते हैं कि जब भगवत स्वरूप सन्त पृथ्वी पर प्रकट होते हैं तो उनके दर्शन के लिए देवताओं को भी मृत्युलोक में किसी न किसी रूप में आना पड़ता है. सुना जाता है कि जब सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज का अवतार खंडू में हुआ था तो सूर्य देवता दर्शन को आए थे आज उन्हीं द्वारा स्थापित चैत्र मेले में जब भगत यह भजन बड़ी मौज से गा रहे थे **मेला रे मेला देखो रे मेला मेला, स्वामी टेऊँराम** का तो इन्द्र देवता से रहा नहीं गया वे तीव्र वेग से अमरापुर दरबार में आ पहुंचे और मेले का आनन्द लेते रहे. जब ब्रह्मस्वरूप गुरूदेव मंच पर विराजमान हुए वो भी साथ-साथ वचनों की वर्षा करने लगे, इधर इन्द्र देवता जल की वर्षा कर

रहे थे. उधर सदूगुरूदेव अमृत रूपी वचनों की वर्षा कर रहे थे। संगत बड़े प्रेम से यह अद्भुत नजारा देख रही थी.आखिरकार सत्संग रूपी अमृत पीकर इन्द्र देवता लौट गए. सतूगुरू महाराज ने पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया.

सामीअ साहिब के श्लोक पुस्तक का विमोचन

सुना है कि सामी साहिब श्लोक बनाकर मटके में डाल देते थे. उनके बाद उनके शिष्यों ने लोकहितार्थ श्लोकों को छपवाकर प्रस्तुत किया. इस बात को लगभग १२५ वर्ष हो गए. अब कड़ी मेहनत करके श्लोकों के इस संग्रह को बड़े ही सुन्दर ढंग से सतूगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने एक छोटे ग्रन्थ का रूप देकर तैयार किया, जिसको स्वामी टेऊँराम जन कल्याण ट्रस्ट ने प्रकाशित करवाया. जिसका विमोचन सदूगुरू महाराज व सन्त मण्डल द्वारा किया गया. इस अवसर पर डॉ. दयाल आशा ने कहा स्वामीजी ने श्लोकों का ग्रन्थ छपवाकर सिंधी साहित्य के लिये उत्तम कार्य किया है. साथ ही **सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत** के पहले व द्वितीय भाग के संयुक्त नवीन संस्करण का विमोचन भी किया गया.

सोने का लॉकेट वो भी चैन सहित

प्रेम प्रकाश संदेश व्यवस्थापकों द्वारा संदेश के प्रचार प्रसार हेतु एक स्कीम चलाई गई जिसमें नए बनने वाले सदस्य व नवीनीकृत सदस्यों में से श्री गुरूदेव द्वारा लाटरी सिस्टम से नम्बर निकाला गया जिसमें ४ भाग्यशाली विजेता जिनको सतगुरू महाराज ने आचार्यश्री के सोने के लॉकेट, चैन सहित (प्रत्येक को ७५००रू. मूल्य के) पहनाये. भाग्यशाली विजेता थे -

१. RH-2563-29672 किशनचन्द प्रेमप्रकाशी, सदूगुरू कुंज, गुरू गोविन्दसिंह कॉलोनी, ब्रह्मपुरी, जयपुर
२. RH-7480 प्रकाश कुमार चन्दानी, ७-च-५ जैन मन्दिर के पास, जवाहर नगर, जयपुर
३. RH-4830 सुन्दरदास तनवानी, ११६१/२५, दयानन्द कॉलोनी, अजमेर
४. RH-7767-29648 रमेश मूलचन्दानी, ११२/३६८, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर

प्रेम प्रकाश सन्देश के सेवाभावी प्रतिनिधियों में से भाग्यशाली श्री गुरूदेव सचदेवा, पंजाब को भी उपरोक्त पुरस्कार ड्रॉ द्वारा पूज्यश्री के कर कमलों से प्राप्त हुआ.

चैत्र मेले व शोभा यात्रा में सेवाधारी संस्थाओं को गुरूदेव द्वारा पख्रर प्रसाद व आशीर्वाद

निष्काम भावना से सेवा करने के लिए श्री गुरूदेव ने निम्नलिखित संस्थाओं को पाखर प्रसाद व आशीर्वाद प्रदान किया. प्रकाश बैण्ड, जीया बैण्ड, सुन्दर बैण्ड ,नानक देव टेन्ट हाऊस, शंकर गैस लाइट, पंडित लाइट हाऊस, लवाजमा शराफत भाई, राम किशोर झांकी, सतनमल विशनदास बर्फ सेवा. इस अवसर पर सतनमल विशनदास परिवार ने पूज्यश्री का स्वागत किया.

दया के सागर पर उपकारी गुरूदेव द्वारा सुबह 4 बजे पल्लव पर पहुंचने के लिए जयपुर के दूरस्थ स्थानों से प्रेमियों के लिए बसों की निःशुल्क व्यवस्था

प्रातः ४ से ६ बजे तक रोडवेज या प्राइवेट कोई भी बस दूर स्थानों से एम.आई.रोड की तरफ नहीं आती है सो कई प्रेमियों को दरबार आने में परेशानी होती है वो भी पल्लव की प्रातः इसलिए सांई ने जयपुर के कई स्थानों से रोडवेज बसों की निःशुल्क व्यवस्था करवाई ताकि संगत को पल्लव पर पहुंचने में असुविधा न हो.

26 अप्रैल

आज चैत्र मेले का अन्तिम पल्लव का दिन था. प्रेमीगण बाहर से भी आकर इस अन्तिम दिन का लाभ उठाना चाहते थे. आज की तैयारी प्रेमीगण व सेवादारी रात्रि से ही कर रहे थे. आज के दिन के लिये सेवकों ने पुष्पों व लताओं की बेलें बनाई थीं. पुष्पों व लताओं की यह बेलें जब मंच पर व श्री मंदिर के बाहरी द्वार पर लगाई गईं तो ये देखने में बहुत ही मनोहरकारी लग रही थी. आज जब प्रातः ४ बजे श्री दरबार में प्रवेश किया तो सत्संग की मधुरकारी धुन बज रही थी सत्संग मंच पर सन्तगण शोभा पा रहे थे और भक्तगण भी ब्रह्मवेला में श्री दरबार पहुंच चुके थे. सदगुरू भगवान की जयजयकार करते हुये सन्तगण सत्संग कर रहे थे.

महाराज श्री मंच पर आसीन होकर सत्संग सभा को अपनी आभा से आलोकित कर रहे थे.

सन्त हरिओमलाल, पूज्य स्वामी स्वयंप्रकाशजी महाराज, पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज के प्रवचन के पश्चात् प्रातः स्मरणीय पूज्य स्वामीजी ने अपनी ओजस्वी वाणी शुरू की तो सम्पूर्ण श्रीदरबार व उनके बाहर बने चारों तरफ बरामदे भी प्रेमीयों से भर चुके थे. समूहों में आ रहे भक्तों के बैठने की व्यवस्था कार्यकर्ता अनुशासित रहकर शान्त भाव से कर रहे थे. मुख्य द्वार से लेकर पूरे अमरापुर परिसर में प्रेमियों को बिठाया गया था. उनके लिये जगह जगह बड़े स्क्रीन वाले टेलीविजन लगाये गये थे.

चैत्र मेले का पल्लव महाकुम्भ मेले के पल्लव से भी महान

महाकुम्भ पर्व तो अमृत छलकने के स्थानों पर लगाया जाता है मगर शुकदेव जी महाराज ने देवताओं द्वारा उस अमृत को लेने से भी इन्कार कर दिया था क्योंकि सच्चा अमृत तो वो है जो ब्रह्मज्ञानी सद्गुरू के मुख से प्रवाहित होता है जिसके द्वारा इसजीव के जन्म मरण के बन्धन कट जाते हैं, आवागमन से मुक्ति मिल जाती है, परमानन्द स्वरूप में स्थिति हो जाती है ऐसे अमृत का पान करने के लिए वो भी अमृत बेला में जिसमें भारत, दुबई, स्पेन, हांगकांग, अमेरिका, सिन्ध आदि देशों से प्रेमी सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उस पल्लव पाने का बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे जिसके बारे में हमारे आचार्यश्री के अवतार धारण करने से पूर्व भविष्य वाणी हो चुकी थी कि फूलवंशी कुल में एक ऐसा बालक (साधारण बालक नहीं) जन्म लेगा जो प्रभु के आगे झोली फैलाकर अनन्त जीवों की आस पूरी करेगा उस वरदान प्राप्त पल्लव का समय ज्यों-ज्यों निकट आता जा रहा था त्यों-त्यों अमरापुर दरबार में जिज्ञासुओं की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही थी.

ब्रह्मस्वरूप आत्मवेता गुरूदेव ने समस्त शिष्यों पर कृपा दृष्टि डालते हुए प्रेमियों के मन पर अमृत की बूंदों को छलकाना शुरू कर दिया. प्रार्थना में बड़ी शक्ति होती है. सदगुरू हमें प्रार्थना करना सिखाते हैं.

थल : प्रात समय में मेरा अर्ज अघाओ
अपने सन्त जनों का मुझसे मेल मिलाओ
प्रभु तुझको लागे जेई सन्त प्यारे,
वेद, शास्त्र पुरान जिनके गीत उच्चारे,
ऐसे सन्त जनों का मुझसे मेल मिलाओ.

गुरू मांगे खजाना भजन दा जो कभी खुटने वाला नहीं. मेरे मन से कामनाओं का बीज समाप्त हो जाय. हम ईश्वर की ओर चलें और संसार अपने आप छूटता चला जाये. व हमारा मन भक्ति व प्रेम रस से भरपूर हो जाये. ऐसा आशीर्वाद देकर सदगुरू महाराज ने पल्लव पाया.

जो जन आ गुरू शरण में, बैठ करे अरदास
कह टेऊँ तिस दास की पूरन करिये आस
दुख सर्व ही दूर हो, लगे न यम की त्रास
कारिज होवन रास, संशय कोई ना रहे.

इस तरह चैत्र मेले के समापन का पल्लव पाकर श्री गुरूदेव ने बधाई का संदेश दिया.

सारे पूजनीय योग्य सन्त महात्मा मंडल व देश विदेश से आए प्रेमियों को चैत्र मेले की लाख लाख बधाईयां. तालियों की गड़गड़ाहट व खण्डू वारो की धुनि बैंड व शहनाई की मधुर आवाज से सारे प्रेमी नाचने व झूमने लगे. इस तरह बड़े ही प्रेम, श्रद्धा, ज्ञान व भक्तिमय वातावरण में आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की शक्ति व असीम कृपा से चैत्र मेला निर्विघ्न सम्पन्न हुआ.

खास बातें

१. इस बार देश विदेश से आये ६ हजार से अधिक प्रेमियों को मिलाकर प्रतिदिन मेले में ५०हजार से अधिक श्रद्धालुजन सम्मिलित होते थे.

२. अपार भीड़ का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है. कि २३ अप्रैल से ही पूज्य गुरूदेव भगवान के सत्संग समय पर पूरे अमरापुर परिसर में भीड़ को रोकने के लिये वहीं पर फर्श बिछाकर उनको बिठाकर बड़ी स्क्रीन पर सत्संग दर्शन का लाभ दिया जा रहा था.

३. २४ अप्रैल को प्रातः श्री अमरापुर स्थान के नन्हे विद्यार्थीयों को सन्त मोनूरामजी की देखरेख में अमरापुेश्वर महादेव मन्दिर पर यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया.

हुआ प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप का संक्षिप्त भव्य आयोजन
सद्गुरू टेऊँराम गऊशाला जयपुर में

८४ वें चैत्र मेले के समापन के पश्चात् २६ अप्रैल मंगलवार को सांय ६ बजे से रात्रि ९ बजे तक प्रेम प्रकाशी मेल मिलाप का दूसरा संक्षिप्त सम्मेलन गौरज से परिपूर्ण परम पवित्रतम धराधाम सदगुरू टेऊँराम गौशाला गणपतपुरा मागीयावास जयपुर में प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य सदगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता व संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, स्वामी जयदेवजी, संत मोनूरामजी, दादी वसीदेवी, दादी लाजवन्ती, सन्त नरेशलालजी, संत हरीशकुमारजी, सन्त भोलारामजी व विद्यार्थी सन्त मण्डल के सानिध्य में सम्पन्न हुआ. आयोजक था स्वामी टेऊँराम जन कल्याण ट्रस्ट. मनभावन हरीचादर ओढ़े (नरम-नरम हरियाली दूब) गौशाला भूमि पर बनाये गये सुन्दर मण्डप में देश-विदेश से आये अतिथियों को ट्रस्टियों द्वारा ससम्मान पूर्वक बिठाया गया. यहाँ पर आपको बता दें फूलों व पेड़ों को बड़े ही करीने के साथ गौशाला में लगाकर उसे ग्रीनलैण्ड का रूप भी दिया गया है.

श्री बी.डी. टेकवानी ने उद्घोषणा यंत्र से जैसे ही सत्नाम साक्षी व गुरूदेव भगवान का जयकारा लगाया तो विशाल मैदान में यत्र तत्र समूहों में फैले बातों में मशगुल प्रेमी मण्डप में पहुंचने लगे. इसके पूर्व सभी को ठण्डाई पिलाकर पूज्य गुरूदेव भगवान व सन्त मण्डल प्रेमियों का स्वागत किया गया. इधर टेकवानी जी ने ट्रस्टीयों से सदगुरू महाराज व सन्त मण्डल को सानुरोध मंच पर लाने का आग्रह किया. तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य पूज्यश्री सन्त मण्डल के साथ मंच पर शोभनीक हुए.

सर्वप्रथम श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के अध्यक्ष वयोवृद्ध श्री किशनचन्दजी वाधवानी ने पूज्य सदगुरू महाराज जी का अभिनन्दन जन कल्याण ट्रस्ट की ओर से किया. श्री तुलसीदास मनवानी, किशचंद वाधवानी, सोनी वाधवानी, राधा गोविन्द, कुमार चन्दनानी इत्यादि ने पूज्य स्वामीजी व सन्त मण्डली का शॉल पुष्पमाला पहिनाकर अभिनन्दन किया.

अब कार्यक्रम के दूसरे चरण में श्री टेकवानी जी ने आज के आयोजन की विस्तृत जानकारी देकर बताया और सर्वप्रथम श्री शंकर सामतानी जाकरता को मंच पर आमन्त्रित किया गया, जहां पर ट्रस्ट की ओर से बाली प्रेम प्रकाशी मेल मिलाप के प्रथम सफल आयोजन के लिये श्री शंकर सामतानी को सदगुरू टेऊँराम मैडल सदगुरू महाराजजी ने पहनाकर को आशीर्वाद दिया. पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने राजस्थानी रेत पर बनी कलात्मक सदगुरू टेऊँरामजी महाराज की सुन्दर फ्रेम की हुई मूर्ति देकर व सन्त जयदेव जी ने राजस्थानी साफा पहिनाकर आशीर्वाद दिया. निरन्तर बज रही तालियों की गूंज के मध्य जकारता के ही अर्जुनदास जी. दलपतजी, किशोरजी, गुल्लू सामतानी को भी इसी प्रकार आशीर्वाद दिया गया. लासपालमास स्पेन से आये खुशीराम-बिन्दुजी व प्रेम प्रकाश मण्डली स्पेन के सदस्यों को भी इसी प्रकार ट्रस्ट की ओर से आशीर्वाद मिला. अमेरिका से डॉ. अशोक-कमल चैनानी के साथ बैंकांक, लन्दन, दुबई, हांगकांग इत्यादि देशों के प्रेम प्रकाशीयों को भी इसी प्रकार स्वामी जी व सन्त मण्डली का आशीर्वाद प्राप्त हुआ. अहमदाबाद, पूना, आगरा, से कन्हैयालाल ईश्वरदास मोहनानी, ग्वालियर से शंकरलाल सबनानी, श्रीचंद पंजवानी, (सम्पादक प्रेम प्रकाश संदेश) द्वारकादास तनेजा, मुरैना से सुरेश सांवल प्रेम प्रकाशी के अतिरिक्त हिसार, दिल्ली रायपुर, कानपुर इत्यादि शहरों के प्रेमियों को सदगुरू महाराज जी के कर कमलों से राजस्थानी कलाकृति के रूप में रेत पर बनी सुन्दर फ्रेमिंग की हुई सदगुरू टेऊँराम जी महाराज की मूर्ति देकर आशीर्वाद दिया गया.

इस अवसर पर स्वामी श्री ब्रह्मानन्दजी महाराज ने गोमाता की महानता के बारे में प्रवचन दिये और गुरूदेव से विनती करते हुये कहा इस का दिन प्रतिदिन विकास हो सदगुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें. सुख के धाम पूर्णकाम श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष सदगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने

अपनी सत्यवाणी में बताया कि गौमाता के शरीर में सभी देवताओं का निवास है. गाय को हमारे माता का स्थान प्राप्त है हमें गायों की रक्षा करनी चाहिये. गौशाला को बढ़ावा देकर गाय की महानता गाय की उपयोगिता का लाभ लेकर अपने पशुधन का विकास करना चाहिये जिससे गाय की सेवा होगी देश की सेवा होगी, समाज की सेवा होगी इससे सभी को लाभ प्राप्त होगा.

आयोजन के अन्त में पूज्य आचार्यश्री की आरती पल्लव पश्चात् सामूहिक भव्य राजस्थानी भोज का आनन्द प्रेमियों ने लिया. उपरोक्त आयोजन यथार्थ होते हुए भी एक सुखद स्वप्न समान लग रहा था. इसलिये कहा गया है **मिलो मिलाओ मिल रहो, मिलो तो मेला होय.**

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-15

प्र.१ श्री अमरापुर स्थान द्वारा सभी भक्तजनों के लिये कौनसी प्रतियोगिता आयोजित की गई है ?
उ. ....

प्र.२ चैत्र मेले में कौनसी दो नई वी.सी.डी. कैसेट का विमोचन किया गया ?
उ. ....

प्र.३ जयपुर में कौनसे तीन स्थानों पर कम्प्यूटर सेन्टर खोले गये हैं?
उ. ....

प्र.४ कहे टेऊँ हरिनाम जप... आचार्य श्री द्वारा रचित शान्ति के दोहे के पूरा करो ?
उ. ....

प्र.५ प्रेम प्रकाश संदेश (प्रेम महिमा अंक) में "दूध ने बढ़ाई" लेख के आधार पर प्रेम की पराकाष्टा क्या है ?
उ. ....

प्र.६ इस वर्ष आचार्यश्री का प्रकटोत्सव कब मनाया जा रहा है ?
उ. ....

प्र.७ कर्मा कुब्जा भीलनी... आचार्यश्री द्वारा रचित दोहे को पूरा करें ?
उ. ....

प्र.८ शास्त्रों में धर्म के कितने लक्षण बताये गये हैं नाम लिखें ?
उ. ....

प्र.९ शास्त्रों में वर्ण व्यवस्था कितनी है, उनके नाम लिखें?
उ. ....

प्र.१० श्री मद्भागवत महापुरूष में कुल कितने स्कन्ध व अध्याय हैं ?
उ. ....

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-14 के सही उत्तर

. शुभेच्छा, सुविचरणा, तनुमानसा, सद्घापति, असंसग्ति, पदार्था भावानी, तुरिया २. मायापुरी (हरिद्वार), जगन्नाथपुरी (उड़ीसा), द्वारिकापुरी (ओखा), साकेतपुरी (अयोध्या), कांचीपुरी (कर्नाटक), अवंतिपुरी (उज्जैन), काशीपुरी (बनारस) ३. सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज ४. तिल भर मछली खात जो, कोटि गऊ करे दान.काशी करवट जा मेर, तो भी नरक निदान. ५. जिन जिन हरि ने प्रेम में, दीना तन मन प्रान. टेऊँ तिन के कदम पर, झुक झुक पड़त जहान. ६. सद्गुरू हरिदासरामजी की माता मोतिलबाई व पिता श्री हीरानन्द जी थे. ७. स्वामी टेऊँराम पोलो क्लीनिक, १०४/७३, जयपथ, मानसरोवर, जयपुर, ८. सांई टेऊँराम लीला तेरी तू ही जाने पद स्मरण प्रतियोगिता ९. श्री अमरापुर स्थान, जयपुर, १०. सतयुग, द्वापर युग, त्रेता युग, कलयुग.

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
एवं स्वामी माधवदास जी महाराज का वर्सी उत्सव

6 जून से 13 जून 2005 तक

कार्यक्रम

स्वामी माधवदास जी महाराज का वार्षिकोत्सव

सोमवार 6 मई 2005 – प्रातः 5 बजे से "प्रभात फेरी" सायं 4 बजे से 6 बजे तक रामधुनि व सत्संग.
– सायं 7 बजे से श्री राम चरित मानस का अखण्ड पाठ प्रारम्भ.

मंगलवार, 7 मई 2005 – प्रातः 7 से 1 तक सत्संग., रात्रि 9 श्री रामचरित मानस का अखण्ड पाठ सम्पन्न.

बुधवार, 8 मई 2005 – प्रातः 5 से 8 बजे तक सत्संग कीर्तन, 8 से 9 बजे तक हवन, 9 से 1 बजे तक सत्संग.
(चन्द्र दर्शन महोत्सव) – श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ एवं श्री गुरू ग्रंथ साहिब के पाठ का प्रारंभ. सायं 4 से 8 बजे सत्संग एवं समाधि पर ज्योति प्रज्वलन उत्सव.

सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का वार्षिकोत्सव प्रारंभ

गुरूवार, 9 मई 2005 – प्रातः 5 से 12 तक सत्संग कीर्तन. सायं 5 से 7 बजे तक जुलूस आदर्शन नगर में.
– सायं 7 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग कीर्तन.

शुक्रवार,,10 मई 2005 – प्रातः 5 से 12 बजे तक सत्संग व गुरू ग्रन्थ साहिब का अखण्ड पाठ प्रारम्भ. सायं 4 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग कीर्तन.

शनिवार,,11 मई 2005 – प्रातः 5 से 12तक सत्संग कीर्तन तथा सायं 4 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग कीर्तन.

रविवार, 12 मई 2005 – प्रातः 5 से 7 बजे तक सत्संग 8 से 9 बजे तक हवन. 9 से 11 बजे तक ध्वजा वन्दन बैण्ड व शहनाई वादन तथा 11 से 1 बजे तक सत्संग संत समागम,
श्री प्रेम प्रकाश–ग्रन्थ, गुरू ग्रंथ साहिब के पाठों का समापन और भण्डारा.
सायं 4 से 7 बजे तक सद्गुरू महाराज का पूजन सायं 7 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग, पल्लव एवं उत्सव की समाप्ति.

सोमवार, 13 मई 2005 – श्री प्रेम प्रकाश आश्रम पुष्करराज में प्रातः 8 से 1 बजे तक सत्संग व भण्डारा.

28 मई 2005 स्वामी माधवदास जी महाराज का 91 जन्मोत्सव

29 मई 2005, रविवार – 20 वाँ सामूहिक विवाह 25 कन्याओं का.

Phone : 0145-2441850
Fax : 0145-2440279
Mobile : 98292-70850

सेवा में,
प्रेम प्रकाश आश्रम (ट्रस्ट)
आदर्श नगर, अजमेर
श्री पुष्कर राज, हरिद्वार व कोलकत्ता

नवनिर्मित प्रेम प्रकाश आश्रम सूरत का उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारोह

29 मई से 2 जून 2005 तक

आयोजन स्थल : प्रेम प्रकाश आश्रम 4 आंचल सोसायटी, माहेश्वरी भवन के पास, प्रेम प्रकाश चौक, सिटी लाईट, सूरत फोन : 0261–5587660

सांई टेऊँराम बाबा की लीलाएँ

चित्रकथा—15

चित्रांकन, लेखन—सुधा जौहरी, जयपुर



आध्यात्मिक वर्गपहेली 18

प्रस्तुति : सुधा जौहरी, तिलक नगर, जयपुर

1		2		3	ॐ	4	5
	ॐ		ॐ	6	7		
8	9		ॐ	ॐ		ॐ	ॐ
ॐ		ॐ	10	11		12	ॐ
13		ॐ	14		ॐ		ॐ
15		ॐ		ॐ	16		17
ॐ	ॐ	18			ॐ	19	
20			ॐ	ॐ	21		ॐ

आध्यात्मिक वर्गपहेली 17 के सही हल

1 गा	2 य	त्री	ॐ	3 य	शो	धा	4 रा
5 ल	क्षा	ॐ	ॐ	म	ॐ	ॐ	हू
व	ॐ	6 अ	7 म	रा	पु	र	ॐ
ॐ	8 रा	मा	नु	ज	ॐ	ॐ	ॐ
9 सं	धा	न	ॐ	ॐ	10 अ	ग	11 द
दी	ॐ	12 वी	13 त	रा	ग	ॐ	या
14 प	15 ला	य	न	ॐ	रा	ॐ	नि
16 न	ल	ॐ	य	ॐ	17 ज	ल	धि

आध्यात्मिक वर्गपहेली १७ व ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-१४ के सही हल भेजने वालों के नामः- अमरापुरधाम जयपुर से-प्रेम प्रकाशी बल्लू टी. रामानी, जयपुर से-प्रेम प्रकाशी मनोहरलाल-रेखा डोडेजा, शंकरलाल सतवानी, कविता-अशोक पुरसानी, अजमेर से-प्रेम प्रकाशी चतुरी मुरलीधर जेसवानी, विशनी जेसवानी, ब्यावर से-प्रेम प्रकाशी हनी, मनीष, लक्ष्मी, मीना, संगीता वासवानी, जोधपुर से-प्रेम प्रकाशी भावना-दीपा बदलानी, रेनू-ममता खेमानी, गांधीधाम से-प्रेम प्रकाशी रमेश बूलचंदानी, भोपाल से-प्रेम प्रकाशी कन्हैयालाल सीतलानी, धमतरी से-प्रेम प्रकाशी सुरेश-ईश्वरलाल, लक्ष्मीदेवी पंजवानी, खैरथल से-प्रेम प्रकाशी ईश्वरी-गंगाराम राजवानी, कोटा से-प्रेम प्रकाशी मनोज राजानी, बीकानेर से-प्रेम प्रकाशी रीता खत्री अमरावती से-प्रेम प्रकाशी रामचंद तोलाराम भारानी, इन्दौर से-प्रेम प्रकाशी मोनी, दिशा नरेशलाल. रायपुर से-प्रेम प्रकाशी गंगा, अमर, रिचा, आशा, शांता, मीरा, श्री-श्रीमती नर्मदाप्रसाद करन, गोंदिया से-प्रेम प्रकाशी विद्या, रेखा, रमेशलाल गम्बानी, गांधीधाम से-प्रेम प्रकाशी रेखा के. वाधवानी, जयंती एम. भक्तानी कामठी से- रवि मुलानी

बाएँ से दाएँ :

१. पर्व विशेष पर प्रातःकाल नगर मार्गों पर भजन कीर्तन करते निकलता दल (३,२)

४. ...में जीते जो मरे, तजे देह अभिमान, कह टेऊँ संसार में, सो नर मुक्ता मान (२)

६. दक्षिण भारत में बालाजी का प्रसिद्ध मंदिर (४)

८. क्रोध त्याग क्षमा धरे, सो है पूजन योग, कह टेऊँ तिहं... से, मिट जावहिं सब रोग (३)

१०. देख-रेख करने वाला अभिभावक (४)

१३. सांसारिक दुःख : संताप, (२)

१४. प्राणीः जिसमें आत्मा हो (२)

१५. बोझा (२)

१६. पालनहारा, हरे पत्तों वाला स्वास्थ्य वर्धक शाक (३)

१८. भक्त ध्रुव की माता, अच्छी आचार पद्धति (३)

१९. क्रोधी परशुराम ने राम के... स्थल पर पदचिन्ह देखकर उनका स्वरूप जाना (२)

२०. '....निरंजन' गोरखपंथी साधुओं की भिक्षा मांगने हेतु पुकार, अदृश्य (३)

२१. इस शास्त्र के आधार पर घर का नक्शा बनता है (२)

ऊपर से नीचे :

१. हिरण्यकश्यप का पुत्र जो पिता की दी हुई यातनाएँ सहते हुए श्री हरि का भक्त रहा (३)

२. पाप, अज्ञान, घोर अंधकार (३)

३. रस्म, रिवाज (२)

४. इष्ट अथवा मंत्र बारम्बार लगातार बोलना (२)

५. 'या अनुरागी चित्त की...समझे ना कोय', वेग रफ्तार (२)

७. एक मुखी अथवा पंचमुखी मोटे दाने जिन की माला साधु संत धारण करते हैं (३)

९. सागर, महर्षि वाल्मीकि का नाम जब वे डाकू थे (४)

१०. हनुमानजी द्वारा लक्ष्मण हेतु लाई गई बूटी (४)

११. नाद, शब्द (२)

१२. गौतम बुद्ध की जन्मस्थली (५)

१३. चैत्र मेले में प्रेम प्रकाश मंडल द्वारा निकाली गई सुंदर झांकियों वाली यात्रा (२)

१७. कमरा (२)

१८. आनन्द, तुलसी मीठे वचन ते... उपजत चहुँ ओर (२)

सही हल के लिये आगामी अंक देखे - सही हल भेजने वालों के नाम आगामी अंक में प्रकाशित किये जाऐंगे. सही हल के लिए वर्ग पहेली, प्रश्नावली की छायाप्रति (फोटोकॉपी) करवाकर अथवा इसी पर भरकर ५ मई तक कार्यालय में भिजवायें. प्रेम प्रकाश संदेश प्रेम प्रकाश आश्रम, गाळ्वे की गोठ लश्कर, ग्वालियर - ४७४००१

तीज - त्यौहार

17 मई 05 मंगलवार - श्री सीता नवमी
18 मई 05 बुधवार - सांई हरिदासरामजी जयंती शुरू (पुरी में)
19 मई 05 शनिवार - मोहिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)
20 मई 05 शुक्रवार - मोहिनी एकादशी व्रत (वैष्णव),
22 मई 05 रविवार - सांई हरिदासराम प्रकटोत्सव, पुरी मेला समापन
23 मई 05 सोमवार - श्री वैशाख, बुद्ध पूर्णिमा
26 मई 05 गुरूवार - श्री गणेश चतुर्थी व्रत
2 जून 05 गुरूवार - अचला एकादशी व्रत
6 जून 05 सोमवार - सोमवती अमावस्या
8 जून 05 बुधवार - चन्द्रदर्शन, सद्गुरू टेऊँराम वर्सी उत्सव शुरू
10 जून 05 शुक्रवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत
12 जून 05 रविवार - सद्गुरू टेऊँराम चौथ
सद्गुरू टेऊँराम पुण्यतिथि, वर्सी उत्सव समापन
15 जून 05 बुधवार - मिथुन संक्रान्ति
17 जून 05 शुक्रवार - श्री गंगा दशहरा
18 जून 05 शनिवार - निर्जला एकादशी व्रत
21 जून 05 मंगलवार - व्रत की पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत
22 जून 05 बुधवार - स्नान दान की पूर्णिमा
25 जून 05 शनिवार - श्री गणेश चतुर्थी व्रत

पुरी मेले की तैयारियां पूर्ण
२१ मई को निकलेगी भव्य शोभा यात्रा

चैत्र मेला समापन के पश्चात् ४ मई से ही पूज्य गुरूदेव भगवान की आज्ञा से पुरी में रहकर सन्त मोनूरामजी, सन्त मुरलीधरजी, विद्यार्थी मण्डल, सांवल प्रेमप्रकाशी, गुरूमुखदास सहित जयपुर, रायपुर, भाटापाड़ा, मुरैना इत्यादि के २५ से अधिक संत व प्रेमी सद्गुरू महाराजजी के निर्देशन में व्यवस्था कार्यों को अन्तिम रूप देने के लिये सेवा कार्यों में जुटे हुये हैं. आपके हाथ में यह अंक होने तक पुरी में सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जयंती मेला शुरू हो चुका होगा.

प्राप्त अधिकृत जानकारी के अनुसार २१ मई शनिवार को सायं ४ बजे बगूला धर्मशाला से समुद्र तक एक भव्य शोभा यात्रा निकलेगी. जिसकी तैयारियां भी व्यापक रूप से की जा रही हैं.

शान्त ही सच्चा वीर है

प्रसिद्ध बादशाह हारून-अल-रसीद के एक लड़के ने एक दिन आकर अपने पिता से कहा कि 'अमुक सेनापति के लड़के ने मुझको माँ की गाली दी है.' हारून ने अपने मन्त्रियों से पूछा कि इस मामले में क्या करना उचित है? किसीने कहा - उसे तुरन्त मार डालना चाहिये, किसी ने कहा - उस बदमाश की जीभ निकाल लेनी चाहिये, किसी ने कहा- उसे दण्ड देकर देश निकाला दे देना चाहिये. इस पर हारून ने अपने पुत्र से कहा - बेटा! तू यदि अपराधी को क्षमा कर सके तो सबसे अच्छी बात है. क्रोध का कारण उपस्थित होने पर भी जो पुरूष शान्त रहकर बातचीत कर सकता है, वही सच्चा वीर है. परंतु यदि तुझमें ऐसी शक्ति न हो तो तू भी उसे वही गाली दे सकता है. परंतु यह क्या तुझे शोभा देगा?

जयपुर में पूज्य महाराजश्री के नाम की स्मृति में निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षा

1. स्वामी टेऊँराम निःशुल्क कम्प्यूटर सेन्टर
प्लाट नं. 128, भाग्यश्री, सिन्धु नगर, नाहरी का नाका, जयपुर (राज.) फोन : 2305590

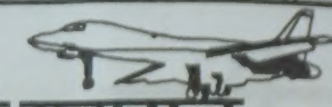
2. स्वामी हरिदासराम निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र
म प्रकाश सत्संग भवन, सिन्धी कॉलोनी, झूलेलाल मन्दिर के पीछे, सांगानेर - जयपुर (राज.) फोनः 98290-33048

3. स्वामी हरिदासराम निःशुल्क कम्प्यूटर सेन्टर
स्वामी सर्वानन्द सत्संग हाल के पास, १/६८८ मालवीय नगर - जयपुर (राज.) फोनः २७५३०३७

ट : इन केन्द्रों पर २ महीनों का बेसिक कोर्स सिखाया जाता है. प्रत्येक माह के अन्तिम सप्ताह में फार्म भरे जाते हैं. धिक जानकारी के लिये इच्छुक छात्र केन्द्र पर लिखे फोन पर अथवा श्री अमरापुर स्थान जयपुर में सम्पर्क करें.



श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज



यात्रा-कार्यक्रम

15 से 23 मई	2005 तक	पुरी, सांई हरिदासराम जन्मो.	मो.098290-14850, 094140-67850
24 मई	2005	यात्रा, पुरी से मुम्बई	मो.098290-14850, 094140-67850
25 से 26 मई	2005 तक	मुम्बई	022-26057711, 26057577
27 से 28 मई	2005 तक	जलगांव	0257-2236713, 2234616
29 मई से 2 जून	2005 तक	सूरत, नवीन आश्रम उद्घाटन	मो.098290-14850, 094140-67850
3 से 4 जून	2005 तक	सूरत, रामनगर आश्रम	मो.098290-14850, 094140-67850
5 से 7 जून	2005 तक	जयपुर	0141-2372423, 2372424
8 से 12 जून	2005 तक	अजमेर, आदर्शनगर उत्सव	0145-2441850, 2440279
13 से 14 जून	2005 तक	पाली, जोधपुर	मो.098290-14850, 094140-67850
15 से 17 जून	2005 तक	जयपुर	0141-2372423, 2372424
18 से 20 जून	2005 तक	खैरथल, सांई जीवनमुक्त वर्सी	01460-222737
20 जून	2005	दिल्ली	011-23859774, 55199138
21 से 22 जून	2005 तक	राजपुरा पटियाला	मो.-098290-14850, 094140-67850
23 से 24 जून	2005 तक	सीकर	मो.-098290-14850, 094140-67850
25 से 26 जून	2005 तक	जयपुर	0141-2372423, 2372424
27 से 29 जून	2005 तक	अहमदनगर	0241-2323397
30 जून से 1 जुलाई	2005 तक	शोलापुर	0217-2733005, 2733003
2 से 3 जुलाई	2005 तक	बागलकोट, जमखण्डी	08354-220749
4 जुलाई	2005	बेलगाम	0831-3090205
5 जुलाई	2005	मुम्बई	022-26057711, 26057579
6 से 7 जुलाई	2005	जयपुर	0141-2372423, 2372424
8 से 11 जुलाई	2005 तक	अजमेर दिल्ली गेट उत्सव	0145-2423993, 2425319
12 से 15 जुलाई	2005 तक	अहमदाबाद	079-22869816
16 से 24 जुलाई	2005 तक	जयपुर	0141-2372423, 2372424
25 जुला.से 26 अगस्त	2005 तक		
27 से 28 अगस्त	2005 तक	प्रयागराज इलाहाबाद	0532-2655214
29 अग. से 1 सितम्बर	2005 तक	वाराणसी बनारस	0542-2225585
2 से 3 सितम्बर	2005 तक	फैजाबाद अयोध्या	05278-246159
4 से 5 सितम्बर	2005 तक	लखनऊ	मो.-098290-14850, 094140-67850
6 से 9 सितम्बर	2005 तक	कानपुर	0512-2215747
10 से 11 सितम्बर	2005 तक	जयपुर	0141-2372423, 2372424
12 से 18 सितम्बर	2005 तक	दुबई	009714-3539815, 3531420
19 से 27 सितम्बर	2005 तक	जयपुर	0141-2372423, 2372424
28 सित. 18 अक्टूबर	2005 तक	हरिद्वार, सांई सर्वानन्द जन्मो.	01334-260144, 260815

समीक्षा



सद्गुरू सर्वानन्द जीवन चरितामृत

दोनों भाग सम्मिलित नवीन संस्करण

आचार्यश्री के परम शिष्य सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का सम्पूर्ण जीवन भक्ति त्याग वैराग्य सत्संग में व्यतीत हुआ. पूरा जीवन गुरू चरणों में समर्पित कर सेवा की. ऐसे परम वैरागी महापुरूष का जीवन चरितामृत जो कि पूर्व में दो भागों में प्रकाशित था. अभी नयी साजसज्जा के साथ दोनों भागों को मिलाकर एक ही नया संस्करण छपकर तैयार हो गया है. मोटे जिल्द व रंगीन आवरण के साथ सुन्दर अक्षरों में प्रकाशित जीवन चरितामृत चैत्र मेले के पावन अवसर पर महाराज श्री द्वारा विमोचित हुआ.

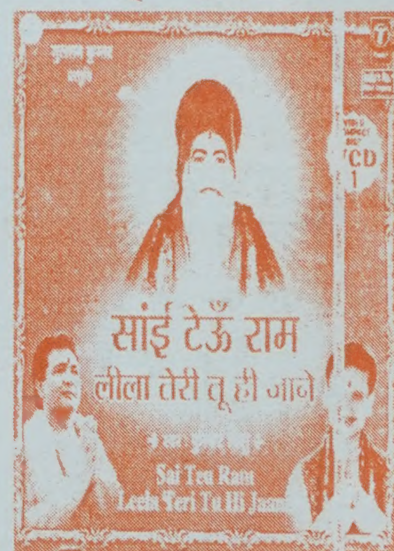
पुस्तक का नाम : सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत

प्रकाशक : श्री अमरापुर स्थान जयपुर भेंटा : ५०रू. मात्र

प्राप्ति : श्री अमरापुर स्थान जयपुरके अतरिक्त रूपी प्रेम प्रकाश आश्रम पर उपलब्ध है.

सांई टेऊँराम लीला तेरी तू ही जाने

टी.सीरीज प्रस्तुति
नई वीसीडी



टी. सीरीज कम्पनी द्वारा नई वीडियो सीडी सांई टेऊँराम लीला तेरी तू ही जाने तैयार की गई है. कैसेट में श्रीमन्दिर के समक्ष कुमार विशु व अन्य साथीगण बडे ही मनमोहक रूपसे महाराजश्री की महिमा बखान कर रहे हैं. मन्दिर को भी बड़े ही आकर्षक रूप में सजाया गया है. कैसेट को टी सीरीज के अश्विनी पंवार व भरत पंवार ने तैयार करवाया है. प्रथम बार टी सीरीज कंपनी द्वारा सांई टेऊँराम लीला तेरी तू ही जाने वी.सी. डी. कैसेट बनाई गई है. जिसका विमोचन चैत्र मेले पर सद्गुरू महाराजजी के द्वारा किया गया. **कैसेट** : सांई टेऊँराम लीला तेरी तू जाने (वी.सी.डी.) **स्वर** : कुमार विशु व साथीगण

कम्पनी : टी. सीरीज **मूल्य** : ५० रू. **सहयोग** : अश्विनी पंवार व भरत पंवार जयपुर

प्राप्ति स्थल : श्री अमरापुर स्थान जयपुर के अतिरिक्त सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध.

नई वीडियो सीडी

सांई बाबा टेऊँराम जीवन दर्शन



सांई टेऊँराम जी महाराज के जीवन से सम्बन्धित चालीसा, भजन, प्रार्थना आदि का समावेश कर सांई टेऊँराम जीवन दर्शन वीडियो सीडी को बड़े ही सुन्दर ढंग से तैयार किया गया है. कैसेट को तैयार करने में गुरू के प्यारे श्याम मनवानी का अथक प्रयास रहा है. कैसेट में खन्डू गांव, खिल्लू प्रसंग, झोपडीयाँ, तपस्यारत महाराजश्री, रेत के टीले, सत्संग, गुरूकुल शिक्षा, नामकरण संस्कार आदि दृश्यों को बड़े ही मनमोहक रूप से दर्शाया गया है.

वीसीडी : सांई टेऊँराम जीवन दर्शन, **मूल्य** : ५० रू. **प्रयास** : श्याम मनवानी जयपुर

उपलब्धता : श्री अमरापुर स्थान जयपुर के अतिरिक्त सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर.

डाक रजि. ग्वालियर संभाग – 161 / 2002–05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा. शा. – 29 / 18 / 81–

आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा

क्या आप जानना चाहेगें

प्रश्न.1– चार प्रकार की वाणी कौन सी होती है ?
प्रश्न.2– चार प्रकार के अन्न कौन से होते हैं ?
प्रश्न.3– चार पदार्थ (पुरूषार्थ) कौन से होते हैं ?
प्रश्न.4– चार वर्ण कौन से होते हैं ?
प्रश्न.5– पांच प्रकार के महायज्ञ कौनसे होते हैं ?
प्रश्न.6– छः ऋतुएं कौनसी होती हैं ?
प्रश्न.7– सप्तरंग (इन्द्रधनुषी रंग) कौन से हैं ?
प्रश्न.8– आठ प्रकार की प्रकृति कौनसी है ?
प्रश्न.9– नव ग्रह कौन से हैं ?
प्रश्न.10– राशियाँ कितनी होती हैं ?

उत्तरमाला

1. चार प्रकार की वाणीः–✣परा ✣पश्यन्ती ✣मध्यमा ✣वैखरी.
2. चार अन्नः– ✣भक्ष्य ✣भोज्य ✣लेह्य ✣चोष्य
3. चार पुरूषार्थः–✣धर्म ✣अर्थ ✣काम ✣मोक्ष
4. चार वर्णः– ✣ब्राह्मण ✣क्षत्रिय ✣वैश्य ✣शुद्र
5. पांच महायज्ञः–✣देवयज्ञ ✣ऋषियज्ञ ✣पितृयज्ञ ✣मनुष्ययज्ञ ✣ भूतयज्ञ
6. छः ऋतुएंः– ✣ वसन्त ✣ ग्रीष्म ✣ वर्षा ✣ शरद ✣ हेमन्त ✣शिशिर
7. सप्त रंगः–✣ स्वेत ✣ नीला ✣ पीला ✣ लाल ✣ हरा ✣ कपिश ✣चित्रिक. शेष सभी रंग इन सातरंगोसे ही बनतेहैं.
8. आठ प्रकृतिः– ✣ आकश ✣ वायु ✣ अग्नि ✣ जल ✣ पृथ्वी ✣ मन ✣बुद्धि ✣ अहंकार. श्रीमद्‌भगवत् गीता के 7 वें अध्याय में ये आठ प्रकृति दर्शायी गई हैं।
9. नव ग्रहः– ✣ रवि ✣ सोम ✣ भोम ✣ बुध ✣ बृहस्पति ✣ शुक्र ✣ शनि ✣ राहु ✣ केतु.
10. बारह राशिः– ✣ मेष ✣ वृष ✣ मिथुन ✣ कर्क ✣ सिंह ✣ कन्या ✣तुला ✣ वृश्चिक ✣ धनु ✣मकर ✣कुम्भ ✣मीन

–कमलेश गुरुनानी जयपुर

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस
के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊ
सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या
शुल्क अवधि लिखी हुई है,
अच्छी तरह जाँचकर अपनी सदस्य
शुल्क समाप्त होने से पहले ही अप
सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों
करा लेना चाहिए. –व्यवस्थाप

सदस्यता क्रमांक
श्रीमान्

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी (सायं 4 से 8 बजे तक फोन : 0751–5045144, शेष समय 2454183) द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश कार्यालय से सज्जाकर रवि ऑफसेट (5078541), कम्पू, सें मुद्रित करवाकर कार्यालय : स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया. फैक्स नम्बर–0751–5045144 सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 0751–2327427, श्रीचंद पजवानी, e-mail : editorpremprakashsandeshgwl@yahoo.co.in